तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय
'देवीना' उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण

3.1 उपन्यास में चरित्र-चित्रण का महत्त्व

उपन्यास में चरित्र-चित्रण का अपना एक अलग महत्त्व है। चरित्र-चित्रण से ही उपन्यास की सृष्टि होती है। चरित्र अपने व्यवहार से अपनी बोलचाल से, अपन छोटे-छोटे कार्यों से अपनी व्यक्तित्व की, मनोभाव की सारी सूचनाएँ दे जाता है। इन सबके द्वारा चरित्र की स्वाभाविक पहचान प्राप्त होती है। युगीन सत्य, बदलते जीवनमूल्य तथा आधुनिक मानव की संवेदना और संदर्भ की अभिव्यक्ति के लिए कहीं-कहीं पात्रों का चरित्र-चित्रण का सहारा लेकर किया जाता है। इस संबंध में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के चरित्र-चित्रण संबंधी विचार को बतलाते हुए डॉ. लक्ष्मीराय कहती है कि "डॉ. लाल ने पौराणिक चरित्रों और अख्यानों का प्रत्यक्ष उपयोग भी किया है जहाँ उनका लक्ष युगीन संवेदना को अभिव्यक्त करना रहा है।"[1]

चरित्र-चित्रण में चरित्र के एक सिरे पर 'वर्गपात्र' तो दूसरे सिरे पर व्यक्तिपात्र रहता है। ऐसे पात्र जो अपनी अपेक्षा अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व अधिक करते हैं 'वर्गपात्र' या 'टाईप' कहलाते हैं। वर्ग पात्र में किसी भी स्तर की कोई वैयक्तिक जटिलता अथवा संश्लिष्टता नहीं होती। वह 'अच्छे' या 'बूरे' वर्गों में सरलता से विभाजित किए जा सकते हैं। ऐसे पात्र सब नामों के भीतर एक ही मूल्य के द्योतक होते हैं। दूसरी और व्यक्तिपात्र दूसरे जैसा होकर भी अकेला और अद्वितीय होता है। व्यक्ति और वर्ग पात्रों के अलावा पात्रों का एक और विभाजन प्रचलित है जिन्हें आदर्शवादी अथवा यथार्थवादी पात्र कहा जाता है। तथा इन दोनों के सीमाओं के बीच आदर्शोन्मुख यथार्थवादी पात्र भी पात्र चरित्र-चित्रण में महत्त्वपूर्ण होते हैं।

उपन्यास मनुष्य की यथार्थताओं से बना एक घर है। इसलिए जब की किसीने इसके निर्माण के लिए लेखनी उठाई वह पात्रों और उनके चरित्र-चित्रण के बिना उपन्यास 'उपन्यास' नहीं कहला सकता और चाहे कुछ भी कहलाए, क्योंकि "उपन्यास का मूलाधार मानव और उसका चरित्र है।"[2] चरित्र चित्रण उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मनुष्य का अस्तित्व उसके चरित्र में है। चरित्र के द्वारा ही हम मनुष्य के व्यक्तिमत्व को प्रकाश में लाते हैं। अतः उपन्यास में पात्रों के चरित्र-चित्रण के महत्त्व संबंधी हम यह कह सकते हैं कि पात्रों की सजीवता, स्वतंत्रता और क्रियाशीलता उपन्यास का प्राण है। चरित्र-चित्रण की प्रभावमयी पूर्णता पर ही महान उद्देश्यों की अवतारणा संभव है।

3.2 'देवीना' उपन्यास के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

(अ) नारी पात्र

3.2 देवीना

1. उपन्यास की नायिका

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल लिखित 'देवीना' उपन्यास की नायिका देवीना है। यह एक नारीपात्र है। समस्त उपन्यास इस देवीना नामक युवती के इर्द-गिर्द घूमता है। प्रारंभ से अंत तक उसका चरित्र एक आदर्श चरित्र रहा है। तथा उसका व्यक्तित्व उत्तरोत्तर विकसित होता गया है। इस उपन्यास के कथानक में वह हर पात्र पर, चाहे वह पुरुष पात्र हो या नारी पात्र उसपर अपने व्यक्तित्व की मुहर लगाए रहती है। वह पात्र उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। अतः देवीना उपन्यास की नायिका देवीना एक आदर्श पात्र है।

देवीना यह इस उपन्यास की एक युवा क्रांतिकारी युवती है। उपन्यास की नायिका के लिए आवश्यक सभी गुण उसमें मिलते हैं। बचपन से ही उपेक्षिता नारी का जीवन जीने वाली देवीना का आरंभिक रूप इतना निखरा हुआ नहीं है मतलब उसका आरंभिक व्यक्तिमत्व इतना प्रभाव पूर्ण नहीं है लेकिन उत्तरोत्तर उसके व्यक्तित्व में विकास होता गया है। और उपन्यास की समग्र कथावस्तु के अवलोकन के बाद कोई भी सूधि पाठक उसे प्रस्तुत उपन्यास की नायिका स्वीकार करता है। देवीना उपन्यास के पूर्ववर्ती उपन्यास की नायिका हो अथवा देवीना उपन्यास के परवर्ति उपन्यास की नायिक हो लेकिन इनमें से प्रस्तुत 'देवीना' उपन्यास की नायिका 'देवीना' का चरित्र-चित्रण तथा नायिकत्व डॉ. लक्ष्मीनारायण लालजी ने अलग ढंग से प्रस्तुत किया है।

उपन्यास की नायिका होने पर भी उपन्यास की कथावस्तु में कुछ-कुछ प्रसंगों पर उसका पतन होता है लेकिन उसी पतन के प्रसंगों पर वह धीरज रखकर अपने संयम को बनाई रखती है। तो कही-कही संपूर्ण बाजी अपने हाथ में होने पर भी वह सिर्फ अपने को नहीं तो तत्कालीन परिवेश को प्रमुखता प्रदान करती है। देवीना प्रस्तुत उपन्यास की नायिका तो है साथ-साथ वह तत्कालीन परिवेश की भी नायिका है। अतः प्रस्तुत देवीना उपन्यास में डॉ. लक्ष्मीनारायण लालजी ने देवीना को नायिका रूप में तो चित्रित किया ही है लेकिन इसके साथ-साथ उसे सुजलामता, सुफलामता लानेवाली देवी लक्ष्मी के रूप में भी चित्रित किया है।

2. नियति की मारी

देवीना नियति की मारी युवती है। वह एक नाजायज बच्ची थी। उसके माँ-बाप का नाम पता उसे जिंदगीभर मालूम नहीं पड़ता। वह एक सड़क के किनारे फैंकी गई लावारिस बच्ची थी। मगर संयोगवश उसे मंगलबाबा नामक एक आदमी रास्ते से

उठाता है और अपने घर ले जाकर उसकी अच्छी तरह से परवरीश करता है। उस बच्ची को अपने खुद की संतान से भी अधिक प्यार करता है। तथा समाज के हर आरोप को सह लेता है। जब बच्ची 'देवीना' को लेकर आस-पड़ोस खुसुर-फुसुर होती है तब मंगलबाबा कहते हैं, "अगर बुचिया (देवीना) चमाइन की बेटी है, तो हम भी चमार है, जाओ, गाँववालो से कहदो।"[3] अतः देवीना एक नियति की मारी युवती है।

नियति की मारी इस देवीना की जीवन कहानी के बारे में उसका लालन-पालन करनेवाले बाबा बतलाते हैं कि जनम देकर माँ इसे कपडों में सहेजकर एक जगह रख रही थी। रखकर थोडी ही दूर हटी कि भोंकार छोडकर रोने लगी। मैं जात का बनिया, घोडे पर अपना सौदा-सामान लादे उधर से गुजर रहा था। मेरी नजर पड़ी, सो बात समझने में देरी न लगी। अनायास मेरे मुँह से निकला - अरे ससुरी, अब काहे रोती! जब अपनी गोद से उतारकर उसके आंचल में रख दिया तो जा, मौज कर। ... मैंने उसे अपने अंग में धर लिया। मेरा वह गाँव यहाँ से सात कोस पूरब दिशा में है। यह इक्कीस साल पहले की बात है। तब मेरा एक भी बाल नहीं पका था, हां! पर तब भी मेरी उमर काफी थी। चालीस से कम नहीं था। काफी दुनिया देख चुका था। बनिया की जात, ऊपर से जिंदगी का इतना लंबा चक्कर, कोई मामूली बात नहीं है। और तराजू हाथ में। बनिया कभी तौल में धोखा नहीं खाता। ऊपर से वह हिसाब-किताब, रोकड-वही भी लिखकर रखता है, हाँ। सो भांगा-भागा बुचिया को घर ले आया। बनियाइन की गोद में डालकर बताया अरे सेठानी भानूपुर के बाजार में उसका प्रसाद मिल गया। देख ... देख तो, कैसे देख रही है जैसे बरखा की अन्धेरी रात में जुगनू जगर-जगर करे।

इसी तरह देवीना इस उपन्यास की नायिका एक नियति की मारी युवती है वह बचपन से ही नियति के चक्कर में घिरती हुई युवावस्था तक पलती है।

3. आत्मसंयमी नारी

देवीना आत्मसंयमी नारी है। अक्सर युवावस्था में युवक-युवतीयाँ अपना आत्मसंयम खोकर भावना के बहाव में जीवन के पथ से भटक जाते हैं। इस उम्र में उन्हें खुद पर ज्यादा भरोसा होता है, वे किसी की सुनते नहीं है। परिणामतया सहज ही वे बुराईयों के दल-दल में फँस जाते हैं। हमारे उपन्यास की नायिका देवीना युवावस्था में जब उसका प्रेमी 'देवकुमार' उसे भागकर शादी करने के लिए कहता है, तब वह उसका कड़ा विरोध करती है। और उसे कहती है – पहले हमारे माता-पिता की अनुमति लिए बगैर हम शादी के बारे में सोचभी नहीं सकते। शादी करने के लिए भाग जाना यह सभी के साथ विश्वासघात होगा। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकती। अतः वह अपने प्रेमी से कहती है, "शादी के लिए पहले हमें हमारे बाबा के पास जाना होगा।"[4] इस तरह

देवीना एक आत्मसंयमी तथा प्रसंगानुरूप आचरण करनेवाली उमदा युवती है।

देवीना इस उपन्यास की नायिका 'देवीना' यह एक आदर्शमय आत्मसंयमी नारी के रूप में पाठक के सामने आती है। उसके आत्मसंयमी आचरण की विविध झाँकिया हमें बचपन से लेकर युवावस्था तक तथा युवावस्था से प्रोढावस्था तक सहजतासे नजर आती है। बचपन से ही वह उपेक्षिता रही है। एक लावारिस बच्ची होने के कारण उसे अपने बाल्यकाल से ही कतिपय बातों के लिए हरपल अपमानित होना पडता है लेकिन फिर भी वह अपने आत्मसंयम को बनाए रखती है और हरेक अपमान को चूपचाप सहती है।

प्रत्येक युवक-युवती अपनी जवानी के दिनों में दिवाने होते हैं और इस दिवानगी में अपने इस युवाजोश में वे अपने आगे-पीछे की बातें सोचे बगैर तथा भूत, वर्तमान या भविष्य की चिंता किये बिना कुछ भी करने को तैयार होते हैं। इस अवस्था में वे किसी की बात सुनते नहीं या अगर सुनते भी है तो सिर्फ सुनने का नाटक करते हैं लेकिन अंतिम बात वे अपने मन से ही करते हैं। लेकिन देवीना इस बात के लिए अपवाद है। वह अपने प्रेम के प्रसंग में भावनामयता का शिकार नहीं बनती वह प्रेमसागर में बह जाने के बजाय अपने दिलोदिमाग से संयत विचार विमर्श करके आत्मसंयमी बन जाती है तथा भावना के उपर अपने बुद्धि से विजय प्राप्त करती है। अतः देवीना उपन्यास की नायिका यह एक आत्मसंयमी नारी के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती है।

4. शिक्षित नारी

देवीना सुशिक्षित युवती है। वह अपने पिता के साथ यहाँ-वहाँ भटकती रहती है लेकिन इस भटकंती में भी वह अपनी पढ़ाई कायम रखती है। स्कूल में पढ़ते हुए भी देवीना हमेशा सबसे आगे रही है। आठवी कक्षा में वह सबसे अव्वल आती है। हर पेपर में उसे अस्सी, नब्बे प्रतिशत अंक मिलते हैं। इसी तरह इंटर में भी वह प्रथम श्रेणी प्राप्त करती है। अतः बी.ए. तक की पढ़ी-लिखी देवीना का अपनी पढ़ाई पर बिलकुल घमंड नहीं है। इतनी पढ़ाई करने पर भी वह कुछ भी काम करने के लिए तत्पर रहती है। अब आगे की पढ़ाई के बारे में जब उसके बाबा उसे कहते हैं तब देवीना अपने बाबा से कहती है, "ना बाबा, कुछ भी कमीं नहीं है इस पढ़ाई में। मैं अब तुम्हारे साथ ही रहूँगी।"[5] अतः इस उपन्यास की नायिका देवीना एक पढ़ी-लिखी शिक्षित युवती है।

देवीना का जीवन बचपन से संघर्षमय रहा है। कोई लावारिस बच्ची अपने जीवन का कितना विकास करेगी इस बात का अनुमान कोई नहीं लगा सकता। क्योंकि लावारिस बच्चों को किन-किन हालात से गुजरना पड़ता है यह हम सब भली भाँति जानते हैं। समाज में उन बच्चों कि कितनी सोचनिय अवस्था होती है इस बात को कोई इन्कार नहीं कर सकता। देवीना इस उपन्यास की नायिका 'देवीना' भी एक लावारिस बच्ची

है। अतः उसका बचपन भी कतिपय समस्याओं के घेरे में झुलसता रहा है। लेकिन अन्य लावारिस बच्चों की तुलना में उसका बचपन काफी अच्छी तरह से बीतता है।

मंगल बाबा और बनियाईन तथआ कलुआ इन तीनों के साथ घर में रहते हुए देवीना एक लावारिस बच्ची होते हुए भी अपनी पढ़ाई मेहनत और लगन से कायम रखती है। अपने भाई कलुआ की तुलना में वह पढ़ाई में काफी तेज है। देवीना अपनी पढ़ाई में पहली कक्षा से तेज रही है। आगे पढ़ाई करते-करते वह आठवी कक्षा में पूरे स्कूल में सर्वप्रथम आती है। तब उसके पिताजी मंगलबाबा को बेहद खुशी होती है। और वे देवीना को आगे खूब पढ़ाने का निश्चय करते हैं। अपने परिवार वालों की इच्छा नुसार देवीना आगे बी.ए. तक पढ़ाई करती है। लेकिन अब वह आगे की पढ़ाई खुद अपनी मर्जी से रुकवाती है। और कुछ कामधंदा कराके अपने परिवार वालों की आर्थिक मदत कराना चाहती है। अतः देवीना एक शिक्षित नारी के रूप में प्रस्तुत हुई है।

5. आज्ञाकारी युवती

देवीना एक आज्ञाकारी युवती है। वह अपने पिता की हर आज्ञा मानती है। उसे अपने पितापर भगवान से भी ज्यादा भरोसा है। वह जानती है कि उसके पिताजी कभी उसका बुरा नहीं कर सकते। वे जो कुछ भी करेंगे, चाहेंगे वह उसके लिए अच्छा ही होगा। इसलिए वह अपने पिता की हर आज्ञा का पालन अपने अंतर्मन से करती है। जब देवीना अपने प्रेमी देवकुमार से विवाह करने की बात अपने पिताजी (बाबा) से कहती है तब बाबा उसे कहते हैं कि तुम पहले एक दूसरे को ठिक तरह से समझो, जानो, देखो फिर विवाह का फैसला करो। अब देवीना के पिता उनके प्रेम की परीक्षा लेना चाहते हैं। उन्हें चार साल तक एक दूसरे से बिछड़कर रहने को कहती है। अतः देवीना अपने पिता की आज्ञा को स्वीकार करते हुए कहती है, "यह हमारे प्रेम की परीक्षा है, हमें स्वीकार है।"[6]

किसी का भी आज्ञाकारी होना उसकी अपनी एक उदात्तता होती है। आज्ञाकारी व्यक्ति के दिल में उस पूज्य व्यक्ति के बारे में गहरी आस्था होती है। उसके प्रति आस्था तथा प्रेमभाव होता है। प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका 'देवीना' एक आज्ञाकारी युवती है। बाल्यावस्था से ही वह अपने माता 'बनियाईन' के प्रति तथा पिताजी मंगलबाबा के प्रति परम आज्ञाकारी रूप में प्रस्तुत हुई है। हरेक युवक तथा युवती की जीवन में उनका यौवनकाल तथा उस समय की प्रेमभावना महत्त्वपूर्ण होती है। उस वक्त वे अपनी मन की इच्छानुसार आचरण करते हैं किसी की कोई बात सुनने के लिए राजी नहीं होते हैं। लेकिन ऐसे समय पर की देवीना अपना संयम बनाएँ रखती है। अपना अज्ञाकारीतापन बरकरार रखती है। और अपने पिताजी की इच्छा का उनकी आज्ञा का पालन करती है। देवीना अपने पिताजी की आज्ञानुसार अपने प्रेम की अग्नि परीक्षा देने के लिए तैयार होती है।

15491

अपने प्रेमी 'देवकुमार' के प्रति की वह आज्ञाकारीता के रूप में प्रस्तुत होती हैं। तथा अपने प्रेमी के भाई 'राजकुमार' के प्रति भी वह आज्ञाकारीता के रूप में प्रस्तुत होती है। जब पूरे चार साल के बाद वह अपने प्रेमी के घर जाती है लेकिन वहाँ जानेपर देवीना का भरसक अपमान होता है, उसके साथ हिनतामय बर्ताव किया जाता है। फिर भी वह अपना संयम तथा आज्ञाकारितापन कायम रखती है। अतः हमारे उपन्यास की नायिका देवीना एक आज्ञाकारी युवती है।

6. साहसी व्यक्तित्व

देवीना एक साहसी व्यक्तित्ववादी युवती है। जब प्रेम की परीक्षा हेतु पिता की आज्ञानुसार वह चार साल के लिए अपना घर छोड़ती है। तब ऐसे ही भटकते-भटकते वह 'लहरतारा' गाँव में आती है। उस गाँव में कुछ आवारा मर्द मिलकर 'काली' नामक युवती को भरे रास्ते में मारपीट कर रहे थे। तथा उसपर जबरदस्ती करना चाहते थे। लेकिन उस गाँव का एक भी युवक या युवती उस अत्याचार से बेचारी 'काली' को मुक्त नहीं कर रहा था। इस समय देवीना उस घटना से क्रोधीत हो जाती है और अपनी बाँहें फैलाकर खड़ी होकर उस औरत को अपने अंग से लगाती है और कहती है, "खबरदार किसीने हाथ उठाया तो।" अब देवीना काली को तथा उसकी विधवा माँ को सहारा देकर उनके घरपर ले आती है। और उन गुंड़ों से कहती है, "सीधे यहाँ से चले जाओ। वरना एक-एक को हँथकड़ी पहनाऊँगी। मैं थाना पुलिस से आई हूँ।"[7] अतः देवीना एक निर्भर, साहसी व्यक्तित्ववाली युवती है।

देवीना ने उपन्यास की नायिका की भूमिका के अनुरूप अनेक जगह पर अनेक प्रसंगोंपर अपने जान पर खेलकर साहस दिखाया है। देवीना बचपन से ही एक साहसी युवती के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुई है। अपने पिता की आज्ञानुसार वह जिस गाँव में चार साल तक रहती है उस लहतारा नामक गाँव में वह साहस के एकानेक करिश्मे दिखाती है। उस लहरतारा गाँव में पहली बार आगमन से ही वह उस गाँव पर अपने साहसी व्यक्तित्व की अलग छाप जमाती है। 'काली' नामक एक बेसहारा युवती की उस गाँव के आवारा नवजवानों से मुक्ति करती है तथा उन युवकों के सामने सीना तानकर खडी होती है और कहती है "खबरदार! किसीने और आगे एक कदम तक बढ़ाया तो"। अतः उसकी उस रौद्र गर्जना से सभी गाँववाले आश्चर्यचकित होतो है। और तबसे उस गाँव पर देवीना की एक अलग सी छाप पड़ती है।

लहरतारा गाँव का एक बी.ए. तक पढ़ा लिखा युवक जब अपना घरद्वार तथा गाँव छोडकर जा रहा था उसे 'देवीना' बड़ी साहस के साथ रोकती है। और उसे अपने घर वापस लेकर आती है। लेकिन उस युवक के पुनः वापस आनेपर उसका पिता 'गादूरमिसिर' उसपर गुस्सा होता है तथा क्रोध से बरस पड़ता है। तब बडी साहस के

साथ देवीना इस युवक के पिता के सामने खड़ी होती है और उनके हर सवाल का जवाब साहस के साथ देती है। अतः देवीना एक साहसी युवती के रूप में हमारे सामने प्रकट होती है।

7. पलायनवादी भावना की विरोधी

देवीना पलायनवादी भावना का कड़ा विरोध करती है। वह कहती है जो है, सो है। उसका हमें स्वीकार करना चाहिए। हमें परिस्थिति का सामना करना चाहिए ना कि उससे भागना। कोई समस्या भागने से हल नहीं होती तो उसका हमें ठीक तरह से सोच विचार करना चाहिए। अतः जब रामदीन नामक एक नौजवान अपना घर छोड़कर भाग रहा था। तब देवीना उसका रास्ता रोकती है और वापस उसे अपने घर लेकर आती है। फिर उसे समझाती हुए कहती है, "जो कुछ है इस गाँव में उसका तुम स्वीकार करो।"[8] अतः देवीना पलायनवादी भावना की निंदा करती है।

देवीना एक स्वाभिमानी नारी है वह अपने अस्तित्व के लिए अंत तक संघर्ष करती है। अतः उसकी यह धारणा है कि समाज में हर व्यक्ति को फिर वह चाहे पुरूष हो या स्त्री हरेक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत रहना चाहिए तथा अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। देवीना की यह भी अंतरिक धारणा है कि मनुष्य को सदैव समाधानी रहना चाहिए। हम जिस परिवार में, जिस समाज में तथा हम जिस परिस्थिति में रहते हैं उसका हमें स्वीकार करना चाहिए। जो है सो है उसी में हमें समाधानी रहना चाहिए। जो कुछ हमारे पास है हमें उसका विकास है। मतलब हम जिस समाज में रहते हैं हमें उस समाज की गंदगी से दूर भागना नहीं है वरन उसी समाज की गंदगी को मिटाने का प्रयास करना चाहिए इसिलिए हमें उस समाज से मूँह मोडकर भागने के बजाय उसी समाज में रहकर उस समाज का सर्वांगिण विकास करना है।

रामदीन नामक युवक अपने परिवार वालों के धिनौने बर्ताव से तथा अपने ही समाज के लोगों की बेहूदा नजरों से बचने के लिए तथा उनके तानों से हमेशा के लिए अपना गाँव छोड़कर चला जाने के लिए तत्पर है लेकिन देवीना उसका रास्ता रोककर उसे पलायनवादी भावना से परावृत्त करती है उसी तरह वह 'काली' तथआ भादवंती नामक युवतियों को भी पलायनवादी भावना से पहावृत्त करती है और अपने-अपने परिस्थिति तथा परिवेश में सकुशल रहने का परामर्श देती है।

8. आत्मविश्वासु नारी

देवीना आत्मविश्वासु नारी है। वह अब जिस गाँव में रहती है वह लहरतारा गाँव सारी दुनिया में बदनाम गाँव है। इस समस्त संसार में जितनी सारी बुराईयाँ है वह इस लहरतारा गाँव में पाई जाती है। लहरतारा गाँव में चोरी-चांडाली खुले आम होती है।

बेडिनों का नाचगाना चलता है। वेश्या व्यवसाय चलता है। गाँव में स्कूल नहीं है। गाँव में बिजली नहीं है, गाँव में जाति-पाँति का भेदभाव विद्यमान है। और इतना ही नहीं तो इस गाँव के लड़का-लड़कियों से कोई शादी तक नहीं करना चाहता। इतने बदनाम इन लहरतारा गाँव को सुधारने का आत्मविश्वास देवीना के अंदर है। वह गाँववालों से संबोधित कर कहती है, "लोग अपनी अपनी खेती बारी करें, हल-बैल रखे, कुदाल चलावें। आदमी लोग चोरी-चांडाली छोड़े, बेडिने शहर में जाकर तन को न बेचे।"[9] अतः देवीना अपने आत्मविश्वास के अनुसार लहरतारा गाँव में उचित परिवर्तन लाती है।

प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका एक आत्मविश्वासु नारी है। वह अपने आत्मविश्वास के बल पर कोई भी मुश्किल काम आसान बना देती है। लहरतारा नामक अप्रगत गाँव में वह आधुनिकता का बिजारोपण करती हैं। और उस गाँव का सर्वांगिण विकास करती है। एक समय ऐसा था की वह लहरतारा गाँव पूरी दुनिया में बदनाम था लेकिन देवीना ऐसे उपेक्षित गाँव में आपने आत्मविश्वास के बल पर विकसितता की नई लहर विकास की पहली किरण लाती है। और उस गाँव को अपनी एक अलग पहचान दिलाती है। यह सब वह अपने परम आत्मविश्वास के बलबुते पर ही तो कर सकती है।

अपने प्रेम को पाने के लिए वह जो अग्निपरीक्षा देती है वर प्रेमपरीक्षा भी वह अपने आत्मविश्वास के बलपर ही देती है। पूरे चार साल वह अपने पिताजी तथा अपने प्रेमी देवकुमार से बिछडकर रहती है। यह अपने सगे संबंधियों से बिछडकर रहना, भले देवीना को अपने आत्मविश्वास के बिना कैसे मुमकिन होता। अतः वह एक परम आत्मविश्वासू युवती के रूप में हर समय प्रकट होती है। अपने प्रेमी देवकुमार को पाने के लिए वह जब उसके घर जाती है तब उसका बड़ा देवर राजकुमार उसे अपमानित करता है। तथा उसे खूब खरी खोटी सुनाता है। लेकिन देवीना उस प्रसंग का सामना बड़े आत्मविश्वास से करती है। अपने देवर को वह अपने आत्मविश्वासु व्यक्तित्व से परास्त करती है। इस तरह देवीना एक आत्मविश्वासु नारी के रूप में प्रस्तुत होती है।

9. वात्सल्यमय माता

देवीना एक वात्सल्यमय माता है। उसे देवकुमार से शादी से पहले ही एक पुत्र की प्राप्ति होती हैं। जिसका नाम है अनुराग। वह अपने प्रेमी पति देवकुमार से विरह का जीवन जीती है। अतः उसके इस विरहमय जीवन में एक मात्र बालक अनुराग ही उसका सहारा है। उसे देखते देखते हैं वह अपना जीवनयापन करती है। अपने पुत्र को वह हमेशा हर्ष और आनंद में रखती है तथा केवल अपने पुत्र की सुरक्षा के लिए भागवंती नामक एक विधवा धोबीन के घर में रहती है। और आगे उसके जिंदगी में एक

ऐसा मुकाम आता है कि वह अपने पुत्र के लिए अपने पति से कहती है, "मेरे पास हमारा बच्चा है, अनु... अनुराग। मैं किसी बच्चे के साथ जा सकती यहाँ से।"[10]

देवीना के अन्य गुणों के साथ-साथ उसके व्यक्तिमत्व को और अधिक विकसित करनेवाले गुण में वात्सल्यमयता यह गुण भी महत्त्वपूर्ण है। वात्सल्य यह गुण हर नारी में वलासमान होता है क्योंकि वात्सल्यमयता की भावना हर नारी में स्थायी भाव के रूप में विद्यमान होती है। लेकिन कुछ नारिया, मतलब कुछ माताएँ ऐसी होती है जिनमें वात्सलयमयता की भावना अधिक मात्रा में रहति है। अतः इसि तरह हमारे उपन्यास की नायिका देवीना के दिल में वात्सलयमयता की भावना अधिक रूप में मिलती है।

अपने एकलौते पुत्र अनुराग के लिए वह एक वात्सलयमय माता के रूप में प्रस्तुत होती है। अपने पुत्र अनुराग के लिए वह हर मुश्किल का सामना बड़ी हिम्मत के साथ करती है। अपने पुत्र के लिए वह भागवंती नामक विधवा तथा भाली नामक एक युवती के घरों में रहती है। यह घर कोई आधुनिक मकान नहीं था। यह घर तो लहरतारा नामक एक अप्रगत देहाती परिवेश का घर था। ऐसे घरों में टुटे फूटे मकानों में रहकर वह अपने बालक अनुराग का पालन-पोषण करती है। वह खुद कतिपय मुसिबतों का सामना करती है, लेकिन अपने पुत्र अनुराग को हमेशा खुशी में रखती है। अपने माता-पिता तथा पति से बिछडकर रहते समय उसे सिर्फ एक मात्र सहारा अपने नन्हें बालक अनुराग का होता है। अतः वह अपने बालक के साथ एक अनजान देहाती गाँव में रहती है। तथा अपने पुत्र अनुराग की तरफ देखकर तथा उसके मुख पर रहनेवाली हसी को कायम रखने के लिए हर गम को सहती है। अतः वह एक वात्सलयमय माता है।

10. परिवर्तनकारी नारी

देवीना एक परिवर्तनकारी नारी है। वह जिस गाँव में रहती थी, वह गाँव काफी बदनाम था। गाँव की औरतें वेश्या व्यवसाय करती थी। लेकिन देवीना दिन-रात मेहनत करके गाँव को सुधारती है। अब गाँव के आदमी लोग खेती-बारी कर रहे है तथा औरतें सूतकताई कर रही है। इसके साथ-साथ उस गाँव में स्कूल नहीं था पर देवीना गाँववालों की मदद से अब लहरतारा गाँव में एक स्कूल बनवाती है। और उस स्कूल में खुद आध्यापिका बन जाती है। चोरों का मनपरिवर्तन करते समय कहती है, "क्या तुम्हें चोरी की कमाई से शांती मिलती है?" तथा वेश्याव्यवसाय करनेवाली औरतों से कहती है, "अगर तुम लोग अपने आपको यह सजा दे रही हो तो मैं भी खुद को यह सजा दूँगी।"[11] अतः कुलमिलाकर देवीना का व्यक्तित्व एक परिवर्तनकारी नारी का व्यक्तित्व ही रहा है।

बेजान बंजर भूमि में भी हरी-भरी हरियाली उगाने की क्षमता देवीना में है। जिस

लहरतारा गाँव को उसने कर्मभूमि बनाई थी उस गाँव का वह सर्वांगिन विकास करती है। वह गाँव काफी अंधकारमय जीवन जी रहा था। उसी गाँव में आधुनिकता का उजाला लाने का काम देवीना करती है और उस गाँव में मौलिक परिवर्तन लाती है। 'जानहजारा', 'गुलमेहंदी', 'बादररेखवा' जैसी वेश्याओं में वह परिवर्तन लाती है। जो हर साल कलकत्त, बंबई जैसे शहरों में जाकर अपना तन बेचती है तथा ढेरो रुपये कमाती है। लेकिन देवीना उन वेश्याओं के पीछे-पीछे शहरों में जाती है तथा उनको वेश्या व्यवसाय करते समय रंगे हाथ पकड़ती है। फिर वह उन युवती वेश्याओं में परिवर्तन लाने के लिए उनके साथ ही वहाँ वेश्या व्यवसाय करने की ठानती है तब देवीना को खुद वेश्या व्यवसाय करते देखकर लहरतारा गाँव की उन वेश्याओं को अति लज्जित होना पड़ता है। तथा अपने को सुधारने के लिए देवीना का वह बलिदान देखकर उनके होश ठिकाने आते हैं। और वेश्या व्यवसाय करनेवाली युवतीया 'जानहजारा', 'गुलमेहंदी', तथा 'बादररेखवा' शर्म से झुककर देवीना के पैर पकडती है। इस तरह देवीना उस गाँव की जवान युवतीयों में परिवर्तन लाती है।

इसके साथ-साथ देवीना लहरतारा गाँव के जो लोग बडे-बडे शहरों में जाकर चोरी, ठठाईगिरी करते थे उनमें भी परिवर्तन लाती है तथा उनसे उचित विचारविमर्श करके उनके जीवन में परिवर्तन लाती है। अतः हमारे प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना एक परिवर्तनकारी नारी है।

11. निष्ठावान प्रेमिका

देवीना एक सच्ची प्रेमिका है, वह अपने प्रेमी देवकुमार से प्रामाणिक प्रेम करती है। जैसा की पहले तय हुआ था, पूरे चार साल बाद देवीना और देवकुमार को बाबा के पास आना था। वहीं पर उनका विवाह होनेवाला था। मानो यह उनके प्रेम की कसौटी ही थी। लेकिन देवीना इस प्रेम की परीक्षा में पास हो जाती है। वह चार साल बाद बाबा के पास आती है पर देवकुमार नहीं आता। वह बाबा से मिलते ही पहला सवाल करती है, "बाबा वह आए?" पर देवकुमार नहीं आता। अतः देवीना को अपने आप पर पछतावा होता है, "मेरा अब तक का सब जानना-देखना निस्सार हो गया। मेरा आत्मसंयम, मेरी सरलता जैसे टूटकर बिखर रही है।"[12] अतः देवीना एक निष्ठावान प्रेमिका है।

प्रेम के दो पक्ष होते हैं, संयोग तथा वियोग। संयोगकालीन प्रेम खिलते वसंत-सा होता है। संयोगप्रेम में मिलन हर्ष लज्जा आदि मनोहारी भाव होते हैं लेकिन वियोगकालीन प्रेम में अपने प्रेमी से बिछडकर रहना पडता है। इस विरह में हर पल अपने प्रेमी से बिछडने का गम सताता रहता है। लेकिन सच देखा जाय तो प्रेम विषय को लेकर अपनी अभिव्यक्ति को वाणी देने वालों ने संयोग तथा वियोग में से संयोगपक्ष की अपेक्षा

वियोग को ही महत्त्वपूर्ण माना है। तथा वियोग (विरह) को ही प्रेम की कसौटी माना है। जो प्रेम विरह में पलता है, तथा जो प्रेम विरह में कायम रहता है, वही सच्चा प्रेम होता है।

देवीना अपने प्रेमी देवकुमार से सच्चा प्रेम करती है। अतः देवीना को भी अपने प्रेम में संयोग के साथ-साथ वियोग का सामना करना पड़ा। संयोगकालीन प्रेम में भी देवीना शांतभाव से तथा संयमभाव से प्रेम करती है। देवीना का वियोगकालीन प्रेम काफी यातनामय रहा है। अपने प्रेमी देवकुमार से बिछडकर वह करीब चार साल तक अलग रहती है। इन चार सालों में वह हरपल अपने प्रेमी को याद करती है। जब उसकी यह विरह की लंबी घडी खत्म हो जाती है और पुनः मिलन का अवसर आता है तब उसका प्रेमी देवकुमार उसे प्रेम नहीं करता। इन विरह की अवधी में वह अपनी प्रेमी का देवीना को भूलता है। लेकिन देवीना सच्ची प्रेमीका है, वह अपने प्रेमी से सच्चा, निस्वार्थी प्रेम करती है।

12. स्वाभिमानी नारी

देवीना परम स्वाभिमानी नारी है। बचपन से जवानी तक उसने अपने स्वाभिमान को बनाए रखा। अपने पिता की इच्छानुसार वह प्रेम की परीक्षा में पास होकर अपने स्वाभिमान को बनाए रखती है। अपने प्रेमी पति देवकुमार से त्यागने पर वह उसके चरणों में गिड़गिड़ाने के बजाए अपने परम स्वाभिमान से खुद की कर्मभूमि तैयार करती है। लहरतारा गाँव में वह जो कुछ भी काम करती है, वह स्वाभिमान के साथ ही करती है। अंतिम बार जब उसका पति प्रेमी देवकुमार उसे लेने आता है तब वह उसके साथ जाने को तैयार नहीं होती। तब वह कहती है, " अब देवीना इस गाँव में बेडिन है.... पतुरिया है। वह जो है इसी गाँव में हैं। वह इसी गाँव में रहेगी।"[13] तब देवकुमार कहता है, "पहले मैंने तुम्हारा अपमान किया था, लेकिन अब मैं उस अपमान के लिए तुमसे क्षमा चाहता हूँ। पर यह कहते ही देवीना कहती है, "मान-अपमान लेनेवाले पर निर्भर है, वरना वह केवल शब्द है, कोरे शब्द। मुझे अपमान क्यों होगा?"[14] अंतिम समय जब देवकुमार देवीना को लेने आते हैं, तथा पुत्र अनुराग को अपनाना चाहते हैं। फिर भी देवीना उसके साथ नहीं जाती और अंत में देवकुमार को ही उसके साथ आकर रहना पड़ता है।

प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका देवीना स्वाभिमानी नारी का एक आदर्श उदाहरण है। उपन्यास की कथावस्तु में कतिपय प्रसंगों पर उसके स्वाभिमान की झलक हमें दिखाई देती है। एक अनाथ, लावारिस बालिका होते हुए भी उसने बचपन से ही अपने स्वाभिमान को आकार दिया और अंत तक अपने स्वाभिमान को बनाए रखा। वह जब अपने प्रेमी को मिलने उसके महलों जैसे घर में जाती है। तब सबसे

पहले उसे अपने बडे देवर 'राजकुमार' का सामना करना पड़ता है। लेकिन वह देवीना-राजकुमार का मिलन नहीं चाहता। इसलिए वह देवीना का सबसे पहले अपमान करता है तथा उसे अपने घर से तथा अपने भाई देवकुमार की जिंदगी से हमेशा-हमेशा के लिए दूर चले जाने कहता है। लेकिन देवीना उसकी बातों का कडा विरोध करती है। फिर वह देवीना को दस हजार रुपये देकर घर से भगाना चाहता है लेकिन परम स्वाभिमानी देवीना वे रुपये उसके मुँह पर मारती है और उसे चेतावनी देती है कि मैं मेरे प्रेम को प्राप्त किए बगैर यहाँ से नहीं जाऊँगी। तुम मुझे नहीं जानते मैं कौन हूँ। अतः हमारे उपन्यास की नायिका देवीना परम स्वाभिमानी है वह अपने इस स्वाभिमान के सामने अपने पति, प्रेमी देवकुमार तक को झुकाती है।

(ब) पुरुष पात्र

3.2.2 देवकुमार

1. उपन्यास का नायक

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के देवीना उपन्यास का नायक देवकुमार है। यह एक पुरुष पात्र है। समस्त उपन्यास इस देवकुमार नामक युवक के इर्द-गिर्द घूमता है। उत्तरोत्तर उसका व्यक्तित्व विकसित हुआ है। वह एक सुखी, संपन्न परिवार का युवक होते हुए भी अपने व्यक्तित्व की खोज में भटकता है। पहले वह उपन्यास की नायिका से प्रेम करता है लेकिन अंत में उसी की शरण में जाता है।

देवकुमार एक संपन्न परिवार का युवक है। इसलिए आम अमिर आदमी जैसा अपना आरंभिक जीवन बिताता है। उसका बाल्यकाल खूब लाडप्यार में बितता है। लेकिन जब वह अपनी युवावस्था में प्रवेश करता है तब उसे सर्वसामान्य आदमी तथा अमिर आदमी की जीवनशैली में होनेवाला बदलाव नजर आता है। तब से उसका अपनी अमीरी में दम घूटने लगता है। अपने घरों में होनेवाले नौकर-चाकरों से वह स्नेहभाव से आचरण करता है। लेकिन अपनी इसी अमीरी से तंग आकर वह अपना सबकुछ छोडकर एक रात घर में बिना किसी को कुछ बताए घर से भाग जाता है। अतः उपन्यास का नायक बनने की दिशा में यह उसका पहला प्रयास था।

अपने घर से अलग होने पर देवकुमार का व्यक्तित्व और विकसित होता है। वह देवीना नामक युवती से प्रेम करता है जो उपन्यास की नायिका है। लेकिन यहा एक बात स्पष्ट है कि देवीना के व्यक्तित्व की तुलना में देवकुमार का व्यक्तित्व स्थायी नहीं है। वह यही-कहीं खंडित व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत होता है। अतः फिर भी उपन्यास की कथावस्तु विकास की दृष्टि से देवकुमार का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वह प्रस्तुत उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण पात्र है।

2. 'स्व' अस्तित्व के प्रति सजग

उपन्यास का नायक 'देवकुमार' 'स्व' अस्तित्व के प्रति सजग युवक है। वह एक संपन्न परिवार का युवक है। उसके घर में नौकर-चाकर रहते हैं। आगरे में उनकी एक बड़ी कोठी है। फिर भी वह अपने खुद के अस्तित्व को निर्माण करने के लिए आगरा की दीवानजी की कोठी से एक दिन बिना किसी को कुछ बताए घर से निकल पड़ता है। अपने अस्तित्व निर्मिती के लिए वह उत्तरप्रदेश से बंगाल, आसाम, महाराष्ट्र तथा गुजरात तक की यात्रा करता है। अतः उपन्यास का नायक देवकुमार अपने खुद के अलग अस्तित्व के प्रति एक सजग युवक है।

देवकुमार प्रस्तुत उपन्यास का नायक है। वह अपने अस्तित्व के लिए बचपन से ही चिंतित दिखाई देता है। वह अपने 'स्व' अस्तित्व के प्रति तो सजग है ही साथ-साथ उसे औरों के अस्तित्व की भी चिंता लगी रहती है। अपने आगरा की हवेली में रहते समय वह अपने किसी नोकर या नौकरानी के उपर कभी भी अपने अमिरी के रोब नहीं जमाता बल्कि उन्हें अपने अस्तित्व के प्रति सदैव जागरुक रखता है। इसी बात को लेकर जब उसका अपने बडे भाई से झगडा होता है तब वह अपना सबकुछ छोडकर घर से निकल पडता है। वह अपना घरद्वार छोडकर अपने बडे भाई को दिखाना चाहता है कि उसका भी अपना एक अस्तित्व है। वह अपनी अस्तित्व के बलबुते पर नई कर्मभूमि का निर्माण कर सकता है।

अपने प्रेम की परीक्षा देते समय वह अपना अलग अस्तित्व निर्माण करता है। और एक सर्वसामान्य युवक से बहुत बड़ी टायर की कंपनी का मालिक बन जाता है। इस समय वह अपने अस्तित्व को और अधिक विकसित करने के लिए जर्मनी, जपान, फ्रान्स जैसे विदेशी राष्ट्रों की यात्रा करता है। और अंत तक अपने 'स्व' अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है। अतः हमारे प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवकुमार 'स्व' अस्तित्व के प्रति सजक युवक है।

3. जिज्ञासु स्वभावी

देवकुमार एक जिज्ञासु स्वभाववाला युवक है। वह जब मालवा प्रांत के मांडू किले का दर्शन करने जाता है, तब वहाँ का प्राकृतिक परिवेश उसे मोहित करता है। वह कुछ दिनों के लिए वही रुकता है। तब वहाँ के निवासी उस किले का इतिहास बताते हैं कि वह किला बाजबहादुर ने अपनी प्रेमिका रूपमती के लिए बनवाया था तथा दोनों में असीम प्रेम था। अतः तभी से देवकुमार उसे किले के संपूर्ण परिवेश को एक जिज्ञासा से देखता है। उसके मन में यह जिज्ञासा पैदा होती है कि बाजबहादुर और रूपमती कैसे दिखते हैंगे? बाजबहादुर ने वह किला कैसे बनवाया होगा? उस समय का प्राकृतिक परिवेश कैसा रहा होगा? आदि अनेक जिज्ञासाएँ उसके मन में पैदा होती है।

ऐसे ही एक रात उसे रूपमती के महल की छत पर चांदनी रात में रूपमती जैसी ही एक सुंदर युवती दिखाई देती है। तब वह जिज्ञासावश अपने आप से कहता है, "पता नहीं, वह नींद थी या अपलक जागरण। उन्माद की बेहोशी थी या जगी हुई चेतना। नशा था या पूरा विवेक, या बीच की कोई ऐसी स्थिति जिसे महज अनुभव किया जा सकता है। कहा या जाना नहीं जा सकता।"[15]

देवकुमार के जिज्ञासु मनोवृत्तीवाले कतिपय प्रसंग उपन्यास की कथावस्तु में दृष्टिगोचर होते हैं। मनुष्य का जीवन क्या है? मनुष्य का अपना अस्तित्व क्या है? यह प्रकृति यह परिवेश क्या है? आदि तरह-तरह के सवालों के जवाब के उत्तरों की जिज्ञासा अपने मन में लिए वह अपना सुजलाम-सुफलाम घर छोडकर अज्ञात दिशा में निकल पड़ता है। इसी जिज्ञासु स्वभाव के कारण ही घर से अलग होकर अपना एक अलग अस्तित्व निर्माण करता है। तथा इसी जिज्ञासा के कारण ही उसे अपनी प्रेमिका की प्राप्ति होती है। प्राकृतिक परिवेश को जिज्ञासावत देखते समय तथा उसमें अतीत की घटनाओं का आरोपण करते समय उसे एक भव्य दिव्य साक्षात्कार होता है। और इसी साक्षात्कार में उसे अपनी प्रेमिका देवीना की प्राप्ति होती है।

अपने अंदर होनेवाले जिज्ञासु स्वभाव के कारण ही उसे अपनी देवीना मिलती है, लेकिन वह फिर उससे बछडती है। और अंत में इसी जिज्ञासु स्वभाव के कारण अपनी प्रेमिका देवीना की उसे पुनः प्राप्ति हो जाती है। अतः प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवकुमार एक जिज्ञासु स्वभाववाला नवयुवक है।

4. प्रेम दिवाना

देवकुमार पहले ही मुलाकात में प्रेम कर बैठता है। देवकुमार को मांडू के किले में देवीना नामक युवती मिलती है। अतः देवकुमार उस युवती देवीना को रूपमती समझते हैं तथा देवीना उस युवक देवकुमार को बाजबहादुर समझ बैठती है। दोनों पर उस किले में घटित अतीतकालीन प्रेमगाथा बाजबहादुर-रूपमती का गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः देवकुमार देवीना से मिलते हैं उससे प्रेम करने लगते हैं तथा उससे बिछड़कर एक पल के लिए भी जुदा नहीं होना चाहते। अब वह प्रेम में दिवाने बन जाते हैं। इसी प्रेम की दिवानगी में देवकुमार देवीना से कहता है, मैं तुमसे अपना ब्याह करूँगा... तुम्हारे बिना अब नहीं रह सकता।"[16] अतः देवकुमार एक प्रेम दीवाना युवक है।

देवकुमार प्रेम के विषय में पागल दिवाने सा प्रतित होता है। वह बिना कुछ सोच विचार किए, बिना कुछ भविष्य का विचार किए पहली ही मुलाकात में उपन्यास की नायिका देवीना नामक युवती से प्रेम कर बैठता है। और जैसा की कहाँ जाता है प्रेम अंधा होता है, तथा प्रेम करनेवाले अंधे होते हैं। वह बिना कुछ सोचे समझे देवीना से विवाह करना चाहता है। और विवाह भी कहाँ जहाँ उनकी पहली मुलाकात होती है उस नीमर्नुष्य जगह पर। अतः यह प्रेम में दीवानगी नहीं तो और क्या है।

मंगलबाबा के पास जब देवीना उसे लेकर आती है, तब वहाँ भी देवकुमार एक दिवाने सा ही बर्ताव करता है। देवीना के पिताजी के हर सवाल का जवाब वह हाँ में देता है। तथा किसी भी तरह से अपनी प्रेमिका देवीना को पाना चाहता है। और अपनी प्रेमिका के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहता है। उसकी इस प्रेम दिवानगी को देखकर देवीना बेहद खुश होती है, तथा उसे एक सच्चा प्रेमी मिलने की शांती मिलती है। लेकिन देवीना के पिताजी मंगलबाबा एक दूरदर्शी इन्सान है। वे देवकुमार की इस दिवानगी में बेवफाई की गंध महसूस करते हैं। इसीलिए वे देवीना-देवकुमार के सच्चे प्रेम की परीक्षा लेना चाहते हैं, और वे अपने दिमाग में एक योजना बनाते हैं, ताकि वे उन दोनों के सच्चे प्रेम की परीक्षा ले सके उनके प्रेम का परिक्षण कर सके। उनके उसी परिक्षण की बात को भी देवकुमार अपने प्रेम की दीवानगी में मानते हैं, स्वीकार करते हैं। अतः देवकुमार एक प्रेम दीवाना युवक है।

5. कल्पना को सत्य माननेवाला

देवकुमार अतीत काल की घटनाओं की वर्तमान के साथ कल्पना करते रहता है। उसकी प्रेमिका देवीना जो की वर्तमान है यथार्थ है लेकिन उसपर देवकुमार अतीतकालीन रूपमती की कल्पना करता है। वह जब देवीना को सागर में नहाती हुई देखता है तब उसे लगता है कि "मांडू के किले में चंपा बावड़ी में वहीं संगीत। रूपमती देवीना नहा रही है। देव बाजबहादुर अपने शाही महल में आ रहा है। दोनों तरफ हूरे खड़ी है। कोई इत्र लिए, कोई पुष्प लिए, कोई रस भरे, कोई गा रही है, कोई साज बजा रही है। देवीना रूपमती... नहीं-नहीं, केवल देवीना नहा रही है। देव बाजबहादुर नहीं, देवकुमार महल की खिड़की से उसे नहाते देख रहा है।"[17] लेकिन अचानक जब देवीना नहाकर उसके सामने आती है तो उसकी वह कल्पना टूट जाती है। अतः देवकुमार कल्पना को सत्य माननेवाला एक भावुक युवक है।

देवकुमार कल्पना को सत्य माननेवाला युवक है। अपने जिज्ञासु स्वभाव के कारण वह प्राकृतिक परिवेश का एक अलग जिज्ञासुभाव से अवलोकन करता रहता है। और इसी प्राकृतिक परिवेश के अवलोकन में वह प्रकृति पर मानवता का आरोप करता है। प्रकृति के फलने, फुलने में देवकुमार को मानव के फलने, फुलने की भावना नजर आती है। अतः अतीत की बीती हुई घटनाओं को भी देवकुमार वर्तमान समय के भावभूमि पर देखता है परखता है। इसीलिए उसे अतीतकालीन प्रणय कथा 'बाजबहादूर' तथा 'रूपमती' की कहानी वर्तमान कालीन किसी नव युवक-युवती की प्रणय कथा सी जान पड़ती है और वह अतीत की प्रणय कथा बाजबहादूर-रूपमती को आज के वर्तमान समय के परिपेक्ष्य में देखने लगता है। इसलिए उसे अपनी प्रेमिका देवीना नहीं तो रूपमती लगती है। कभी-कभी देवकुमार अपनी प्रेमिका देवीना को देखते-देखते

अतीत में खो जाता है और अपनी प्रेमिका देवीना को अतीतकालीन मांडूकिले की महारानी रूपमती के रूप में देखता है। फिर बड़ी देर बाद उसके होश ठिकाने आते हैं और उसे वर्तमान का अपने वास्तव का बोध होता है। अतः हमारे प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवकुमार कल्पना को सत्य माननेवाला एक कल्पनाप्रदान मनोवृत्तिवाला नवयुवक है।

6. आज्ञाकारी व्यक्तिमत्व

देवकुमार एक आज्ञाकारी युवक है। वह देवीना से प्रेम करता है तथा उससे ब्याह करना चाहता है। तब वह देवीना के बाबा से कहता है, "बाबा हमने ब्याह करने का फैसला किया है। अब हमें आपका आशीष चाहिए।"[18] लेकिन तब देवीना के बाबा उसे कहते हैं, "तुम्हारा प्रेम वास्तविक, वर्तमानकालीन प्रेम नहीं है तो वह एक अतीतकालीन कल्पनाविलास मात्र है। अतः ऐसे प्रेम को मैं प्रेम नहीं मानता। अतः आप दोनों को प्रेम की परीक्षा देनी होगी और बाबा देवीना को कहते हैं, "तुम यहाँ से पूरब दिशा में जाओ, तथा देवकुमार तुम यहाँ से पश्चिम दिशा में जाओ और ठीक चार साल बाद वापस यहाँ मेरे पास आना है। तब भी अगर तुम्हारा प्रेम 'प्रेम' रहा तो तुम्हारा विवाह वही पर तुरंत किया जाएगा। अतः देवकुमार बाबा की उस आज्ञा को स्वीकारता है और बाबा के चरण पकड़कर कहता है, "हमें स्वीकार है।"[19]

देवकुमार के जीवनयापन आज्ञाकारीता के कतिपय प्रसंग नजर आते हैं। अपने प्रेम को सच्चा साबित करने के लिए वह अपनी प्रेमिका देवीना के पिताजी मंगलबाबा की आज्ञा मानता है तथा पूरे चार साल अपने प्रेमिका से अलग रहता है। इसके साथ-साथ जब वह अपने घर आगरा की दिवाणजी की कोठी में आता है तब शुरू शुरू में उसके उपर अपने प्रेम का नशा रहता है। देवीना से बिछडने का गम उसे सताता है। लेकिन धिरे-धिरे दिन गुजरते हैं वैसे-वैसे उसके प्रेम का नशा मतलब प्रेम का अंमल कम होता जाता है और वह अपने बडे भाई राजकुमार की बातों में आने लगता है। क्योंकि वह जब देवीना से बिछडकर अपने घर आता है तब उसका भाई राजकुमार उसे यह चेतावनी देता है कि मेरे जीते जी तुम्हारा और देवीना का विवाह नहीं हो सकता अतः तुम्हें उस लड़की देवीना को भूलना होगा। अब देवकुमार का देवीना को भूलते जाना अपने बडे भाई राजकुमार के प्रति आज्ञाकारीता नहीं तो और क्या है?

इस तरह देवकुमार अपने जीवन के दो अहम प्रसंगों पर एक आज्ञाकारी युवक के रूप में प्रस्तुत होता है। पहली बार अपने प्रेम को खरा साबित करने के लिए अपनी प्रेमिका के पिताजी के आज्ञानुसार पूरे चार साल अपनी प्रेमिका से बिछडकर रहने की आज्ञा का पालन करता है। तो दूसरी बार अपने भाई की सलामती के लिए हो या

समाधान के लिए हो देवीना को भूलने की कोशिश करता है। अतः वह एक आज्ञाकारी युवक के रूप में प्रस्तुत होता है।

7. अन्याय-अत्याचार का विरोधी

देवकुमार अन्याय-अत्याचार का विरोध करनेवाला युवक है। वह एक संपन्न कुल का युवक है। उसके घर में अनेक नौकर-चाकर थे। लेकिन कोई नौकरों पर अन्याय करता तो उसका खून खौल उठता। एक रात ढ़ाई बजे उसके बड़े भैया राजकुमार शराब पीकर आते हैं और उनकी नौकरानी (रखैल) माधवी को आधीरात को जगाते हैं तथा उसे जबरदस्ती गाना गाने को कहते हैं और उसके ना कहने पर उसे जबरन तहखाने में बंद करते हैं। तब देवकुमार गुस्से से अपने बड़े भाई को कहता है, "आप आदमी है कि हैवान? मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता।"[20] अतः देवकुमार अन्याय-अत्याचार का विरोधी है।

देवकुमार के व्यक्तित्व का यह गुण प्रसंगानुसार काफी रौद्र रूप धारण करता है। वह एक ऐसा नौजवान है जो अन्याय अत्याचार का कडा विरोधी है। फिर वह अन्याय किसी गरीब पर हो या किसी अमिर पर हो वह तुरंत उस अन्याय का विरोध करता है। इसके साथ-साथ वह अन्याय अत्याचार का विरोध करते समय अपने तथा पराए की भावना का विचार नहीं करता। उसके लिए सभी समान है तथा जो भी अत्याचारित हो वह उसके लिए उसके दया को पात्र है। देवकुमार एक खानदानी अमिर परिवार का नौजवान है फिर भी वह अपने महलों में होनेवाले नौकरों पर अन्याय-अत्याचार नहीं करता बल्कि किसी को उनके उपर अन्याय-अत्याचार करने नहीं देता था।

आगे अपनी विकसित अवस्था में देवकुमार बड़ा उद्योग-व्यापारी बनता है। तथा वह एक बहुत बड़ी रबर के टायर बनाने की कंपनी निकालता है। अतः वह एक धनवान, अमीर शेठ बन जाता है। लेकिन नियति या भाग्य उसका साथ नहीं दोता और एक दिन उसकी उस टायर बनानेवाली कंपनी को आग लग जाती है। उस भयंकर आग में उसकी पूरी कंपनी जलकर नष्ट हो जाती है। और इतना ही नहीं तो उसी आग में आस-पड़ोस की गरिबों की झोपडियाँ नष्ट हो जाती है। तब देवकुमार का ह्रदय करूणा से द्रवित होता है और वह खुद वहाँ दिन-रात मेहनत करके उन गरिबों की झोपडियाँ पुनः बनाता है। अतः वह एक अन्यायी विरोधी भावना का युवक है।

8. जातीयता का विरोधी

देवकुमार परंपरागत जातिप्रथा को नहीं मानता। वह एक अमीर खत्री परिवार का नवयुवक है लेकिन जब देवीना से प्रेम करता है तो उसके प्रेम में सबकुछ भूल जाता है। जब वह देवीना के साथ शादी करना चाहता है तब देवीना के बाबा उसे बताते हैं कि देवीना एक लावारिस बच्ची है। उसका न कुल मालूम है न जाति। तब भी

देवकुमार देवीना से ब्याह करने के लिए तैयार हो जाता है। लेकिन देवकुमार के इस फैसले का विरोध करते हुए बड़े भाई राजकुमार कहते हैं, "वह किसी की छोड़ी हुई लड़की है, जिसके न बाप का पता है न माँ का।"[21] तब देव बड़े गंभीर स्वर में कहता है, "कुल-जाति-धर्म से मेरा कोई संबंध नहीं। यह सब मेरे लिए अब बेमानी है।"[22] इस तरह नायक देवकुमार जातीयता का विरोधी है।

प्रस्तुत उपन्यास के नायक देवकुमार के व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से उसका खुलकर जातीयता का विरोध करना यह बात काफी महत्त्वपूर्ण है। वह एक श्रेष्ठ मानेजानेवाले खत्री परिवार का युवक है। बचपन से अमीरी के वातावरण में पले देवकुमार में सर्वसमावेशक भावना का बिजारोपण हुआ था। वह अपने आगरा की कोठी में होनेवाले नौकरों के प्रति की समन्वयकारी भावना से प्रस्तुत आता था। अपने आश्रय में रहनेवाले वे नौकर चाकर पिछडी जाती के होते हुए भी वह उनके साथ अपने परिवार के सदस्यों जैसा ही व्यवहार करता था। जब भी कोई उन गरिब मजदूरों के प्रति जोर जबरदस्ती करता है, तब वह उस जोर जबरदस्ती करनेवाले पर फिर वह चाहे, अपने से बड़ा हो या छोटा वह उसका मुहतोड जवाब देता था।

जब देवीना को लेकर देवकुमार और राजकुमार इन दो भाईयों में झगडा होता है। तब देवकुमार चुपचाप अपने बड़े भाई राजकुमार की बातें सुनता है लेकिन जब राजकुमार देवीना की हीन जाती के बारे में बोलते हैं तब देवकुमार का संयम छुटता है और वह रौद्र रूप धारण करके अपने भाई का तथा उनके जातिवादी विधान का कड़ा विरोध करता है। और अपने बडे भाई से कहता है जाँति-पाँति मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती। आप चाहे तो मुझे घर से बेघर कर ले लेकिन मैं विवाह इसी नीची जातिवाली देवीना से ही करूँगा। अतः देवकुमार जाँति-पाँति प्रथा का कडा विरोधी है।

9. षड़यंत्र का शिकार

नायक देवकुमार अपने मामा तथा बड़े भाई राजकुमार के रचे षडयंत्र का शिकार बन जाता है। जब देवकुमार देवीना के प्यार में पागल हो जाते हैं, तथा उससे विवाह करना चाहते हैं। लेकिन यह बात बड़े भाई को बिलकुल पसंद नहीं आती। अतः वे यह सारी हकीकत अपने मामा से बताते हैं तब मामा राजकुमार के साथ मिलकर एक षड़यंत्र रचते हैं। जिसमें देवकुमार बुरी तरह फँस जाता है। मामा कहते हैं कि उसे कोई उद्योग धंदे में लगाया जाए ताकि वह उसमें पड़कर अपने प्रेम को भूल जाएगा। मामा कहते हैं, "एक ही वर्ष में यह पता भी न रहेगा कि उसकी कोई महबूबा भी है। फिर कहीं उम्दा घर ठाट से शादी कर देंगे, बस।"[23] अतः वाकई देवकुमार उस षड़यंत्र का शिकार बनता है। देवीना को भूलता है।

देवकुमार एक भावना प्रदान युवक है। अब जैसा की हम अनुभव करते हैं या यह आम बात है कि भावनिक मनुष्य को कोई भी फुसला सकता है। वैसे हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में यह देखते आए है कि भावनिक मनुष्य को खुले आम, दिनदहाडे लूट लिया जाता है। अतः यही बात हमारे प्रस्तुत उपन्यास के नायक देवकुमार के बारे में घटित होती है। देवकुमार को अपने जीवनयापन में मुख्य तौर पर दो बार षडयंत्र का शिकार होना पड़ता है। षडयंत्रों से बाहर निकलते-निकलते उसकी जिंदगी का रुख बदल जाता है।

पहली बार वह षडयंत्र का शिकार तब होता है जब वह अपनी भावना के परमोच्च स्थान पर था। अपने जीवन की धुमक्कडी में वह अपने जीवन का मर्म खोजने अपने घर से निकलता है। इसी भटकंती में उसे अपने जीवन को निश्चित आकार देनेवाली अर्धांगिनी मिलती है। अतः वह उस अर्धांगिनी देवीना नामक युवती से पहली ही नजर में प्रेम कर बैठता है तथा उसके साथ विवाह करना चाहता है। लेकिन तब उसकी प्रेमिका कहती है कि पहले उसे अपने पिताजी की आज्ञा लेनी चाहिए। फिर देवकुमार तथा देवीना उसके पिता के सामने उनके विवाह का प्रस्ताव रखते हैं। लेकिन वे एक षडयंत्र रचते हैं और दोनों को चार साल के लिए अलग-अलग रखते हैं। दूसरी बार देवकुमार अपने बडे भाई राजकुमार तथा अपने मामा के षडयंक्ष का शिकार होता है। और घर से अलग होता है।

10. प्रेम की कसौटी में पराजित

देवकुमार प्रेम की कसौटी में पराजित होता है। प्रेम की सच्ची कसोटी विरह में होती है। जो प्रेम विरह में पनपता है, तथा कायम रहता है वही सच्चा प्रेम होता है। मगर देवकुमार का देवीना के प्रति होनेवाला प्रेम चार साल के विरह में समाप्त हो जाता है। लेकिन उसकी प्रेमिका देवीना का प्रेम इस विरह में भी कायम रहता है। वह जब चार साल बाद अपने प्रेमी से मिलने आती है तब वह उसे पहचानने तक से इंन्कार करता है और प्रेमिका देवीना का अपमान करते हुए उसे कहता है, "मैं आपसे कल बात कर सकता हूँ। इस समय मेरे पास बिल्कुल भी वक्त नहीं हैं। मुझे एक जरूरी मिटींग में शामिल होना है।"[24] अतः प्रेम की कसौटी में नायक देवकुमार पराजित होता है तथा अपनी मस्ती में ही रहता है।

देवकुमार देवीना के प्रति अपना प्रेमभाव निभाते समय जितना अधिक हर्ष तथा उल्हास में संयोगपक्ष में रहता है, उतना अधिक आनंदमय वियोगपक्ष में नहीं रहता। जितना एकनिष्ठ प्रेम वह संयोगकाल में करता है उतना अधिक एकनिष्ठ प्रेम वह वियोगकाल में नहीं रहता। अपने प्रेमी को कसौटी में हरपल याद करनेवाली देवीना अंत में अपने विरह की कसौटी में उचित फल की प्राप्ति नहीं कर सकती। क्योंकि

उसका प्रेमी उसे प्रेम में धोखा देता है। जैसा की पहले तय हुआ था देवीना और देवकुमार पूरे चार साल तक अपने प्रेम की अग्निपरीक्षा देते हैं। इस अग्निपरीक्षा में प्रेम की विरह ज्वाला को सहते-सहते एक-एक पल बिताते हैं। लेकिन इस विरह की अग्नि में तपकर देवीना का प्रेम शुद्ध सोने की तरह अग्निपरीक्षा में सफल होता है बल्कि उसका प्रेम तो पहले प्रेम की तुलना में और अधिक तेजस्वी बनता है। तो देवकुमार का प्रेम इस विरह की अग्नि में तपकर खरा सोना न होने के कारण उसी विरह की आग में जलकर नष्ट होता है।

अपने पुत्र अनुराग के प्रति भी देवकुमार प्रेममय वात्सल्यकारी भावना नहीं जुटा पाता। जब देवीना अपने पुत्र अनुराग समेत उसे मिलने आती है, तब दौलत की तथा अपनी प्रसिद्धि की नशा में अंधे देवकुमार अपनी पत्नी को ना सही लेकिन अपने एकलौते पुत्र अनुराग को भी प्रेम नहीं करते तथा उसका प्रेम नहीं लेते। अतः देवकुमार प्रेम की कसौटी में पराजित नायक है।

11. पश्चातापदग्ध देवकुमार

देवीना उपन्यास के अंत में नायक देवकुमार को पश्चाताप होता है। पहले वह अमीर आदमी था, वह बड़ी टायर कंपनी का मालिक बनता है, देश तथा विदेश को विमान से जाता-आता है। तब उसे देवीना मिलने जाती है, तथा अपने तथा उसके प्रेमसंबंध के बारे में बतलाती है। पर तब दौलत के नशे में चूर देवकुमार उसे घर से निकाल देता है। लेकिन परम स्वाभिमानी देवीना पुनः आत्मविश्वास से काम करती है तथा लहरतारा गाँव में अपनी कर्मभूमि बनाती है और अपने एक अलग अस्तित्व के साथ पुत्र अनुराग समेत रहती है। लेकिन फिर देवकुमार को अपने किए पर पछतावा होता है और वह देवीना की क्षमा माँगता है तब देवीना कहती है, "फिर यह इस तरह हाथ जोड़ने की जरूरत क्या है?"[25] लेकिन अंत तक देवीना उसके साथ नहीं जाती बल्कि देवकुमार ही देवीना के पास रहने आता है।

मनुष्य जब दौलतवाला बनता है तब वह दौलत के नशे में अंधा होता है। क्योंकि उसकी काली सफेद आँखोंपर दौलत का पर्दा पड़ता है। इसिलिए वह हर आदमी की तरफ फिर चाहे वह अपना हो या पराया उसी अमीरी की नजर से देखता है। अतः धन दौलत के नशे में इतना चूर हो जाता है कि वह अपने जैसे दौलतमंद आदमी से ही संबंध रखना पसंद करता है। अपने से छोटे या गरीब आदमी से बात तक करने में उसे शर्म सी आने लगती है। फिर तो गरीब आदमी से कोई संबंध रखने की बात तो कोसों दूर की बन जाती है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवकुमार कि अमीर आदमी बनने के बाद अपने आप को एक अलग टाईप का आदमी समझता है, तथा गरिबों से घृणा करने लगता है। एक

दिन जब अपनी प्रेमिका देवीना उसे मिलने आती है तब वह उसे पहचानने तक से इन्कार करता है। उसे घर से निकालता है। लेकिन फिर चंद दिनों में किस्मत का पासा पलट जाता है। तब उसे देवीना के शरण में जाना पडता है। तब देवीना उसे फटकारती है। अतः फिर उसे अपने किए पर पछतावा होने लगता है। इतना ही नहीं तो जब उसे अपना खुद का नन्हा पुत्र 'अनुराग' अपनी तोंतली जबान में यह सवाल करता है कि तुम मेरे कौन हो? तब उसे बहुत अपमानित होना पडता है। और उसे अपने पत्नी देवीना तथा पुत्र अनुराग के प्रति किए हुए बर्ताव के लिए बडा गहन पछतावा होता है।

3.3 देवीना उपन्यास के गौण पात्र

अ) पुरुष पात्र

3.3.1 मंगलबाबा

मंगलबाबा यह देवीना उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण गौण पात्र है। लेकिन यह गौण पात्र होते हुए भी उसकी उपन्यास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वह शहर से बाहर अलग से एक कुटिया में अपनी बेटी समेत रहता है। वहीं बेटी हमारे उपन्यास की नायिका है। मंगलबाबा का अच्छा खासा परिवार था। उनकी पत्नी का नाम 'बनियाइन' था तथा उनके इकलौते पुत्र का नाम कलुआ था। देवीना उनकी सगी बेटी नहीं थी। एक दिन मंगलबाबा को वह सड़क के किनारे फेंकी रोती-बिलगती मिलती है। लेकिन उस लावारिस बच्ची को वह खुद की संतान से भी अधिक स्नेह दुलार से पालते हैं तथा उसे बी.ए. तक पढ़ाते हैं। फिर वह जब जवान बनती है तो उसे उसके जीवन के बारे में फैंसला करने का अधिकार भी देते हैं। बाबा के जीवन संबंधी विचार काफी उदात्त है, वे कहते हैं, "इस संसार में जगत् में जो कुछ है, वह सब ईश्वरमय है। सबकुछ सब में है। सब कुछ समान रूप से सबके लिए है। यहाँ कुछ पाने के लिए कीमत देनी होती है।"[26] मंगलबाबा मनुष्य प्रेम के साथ-साथ पशुप्रेमी भी थे। उन्होंने अपनी कुटियाँ के आस-पास अनेक पशु-पक्षी पाल रँखे थे। उन पशुओं के साथ वे मनुष्य जैसा ही आचरण व्यवहार करते थे। मंगलबाबा अपनी प्रिय गाय संबंधी कहते हैं, " इसका नाम है जानकी। यह प्लेट में चाय नहीं पीती। पिएगी तो मेरी हथेली में। खाएगी तो मेरी थाली में।"[27] इस तरह मंगलबाबा का व्यक्तित्व मिलनसार, पशुप्रेमी, जातीयता का विरोधी है। बाबा के पास दिव्यदृष्टि है, यह दृष्टि उन्हें प्राप्त हुई है। अब तक के भोगे हुए जीवन के अनुभवों से।

मंगलबाबा अरे! जिनके नाम में ही मंगल हो वह अपने जीवन यापन में अमंगल काम कैसे कर सकते हैं। वह जितना प्रेम मनुष्यजाती से करते थे उतना ही प्रेम पशुपक्षीयों से भी करते थे। मंगलबाबा के पास एक अनोखी दृष्टि थी। अपनी उस अनोखी अनुभवी

दृष्टि से मानव विशेष के स्वभावों का उनके अंतरमन का वे बखूबी अंदाज लेते थे। इतना ही नहीं, तो वे अपने इस अनुभवी दिव्य दृष्टि से पशु-पक्षियों के भी स्वभावों का अनुमान लगाते थे। उनकी भाव-भावनाओं का पता लगाते थे। अपने यहाँ पलि जानकी नामक गाय के स्वभावविशेष के बारे में वे अपनी पुत्री देवीना से कहते हैं। "यह है बड़ी चिमटचोर। अव्वल दर्जे की चोट्टी। खूँटा-पगहा तुडावें। किसीके घर में चुपके से घुसकर माल खा आवे। दूध दुहने जाय कोई तो थन में दूध चुरा ले। ऐसा साँस खींचे कि सारा दूधा हवा। फिर कोई क्या करे इसे? मालिक ने एक दिन खूब पीटा और घर से ही निकाल दिया।

मंगलबाबा के प्रेम विषय को लेकर भी काफी उच्च विचार हैं। वे कहते हैं आजकल के युवा युवक-युवतीयाँ प्रेम को ही सबकुछ मानकर अपने जीवन का विनाश करते हैं। वे कहते हैं कि आजकल के युवाओं को अपने जीवन में प्रेम को इतना महत्त्व नहीं देना चाहिए। काफी सोच समझकर अपने जीवनसाथी को चुनना चाहिए। केवल भावना में आकर, तथा उमंग में आकर कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए तो बड़ी सोच समझकर अपने दिल तथा दिमाग से एकरूप होकर निर्णय लेना चाहिए। इसिलिए वे अपनी पुत्री तथा उसका प्रेमी देवकुमार को उनके प्रेम की कसौटी के लिए चार साल तक अलग रखते हैं।

3.3.2 राजकुमार

राजकुमार एक ऐषआरामी व्यक्ति है। वह उपन्यास का नायक देवकुमार का बड़ा भाई है। राजकुमार को अपने खानदान तथा धन-दौलत का बड़ा घमंड है। उसके कोठी में अनेक नौकर तथा नौकरानियाँ है। राजकुमार एक कामुक स्वभाववाला व्यक्ति है। उसकी दो रखैल है, जोत्स्नाबाई तथा माधवी, वह उनका सिर्फ शोषण करता है। वह एक आवारा, बदचलन तथा शराबी व्यक्ति है। वह अपने नौकरों से तथा नौकरानियों से हमेशा जुल्म-जबरदस्ती करते हैं। एक बार रात को ढ़ाई बजे शराब पीकर आते हैं तथा अपनी रखैल माधवी को इतनी रात को संगीत सुनाने को कहते हैं। और जब वह मना करती है तब गुस्से में उसे कहते हैं, "ले जाओ इसे तहखाने में बंद कर दो।"[28] अतः राजकुमार यह इस उपन्यास का एक खल पात्र है। वह अपने छोटे भाई देवकुमार तथा देवीना के प्रेमसंबंधों का कड़ा विरोध करता है। और अपने भाई को कहता है, "मैं तुम्हें उस लावारिस लड़की के साथ शादी नहीं करने दूँगा। अगर तुम अपना भला चाहते हो तो हमारे खान-दान की कोई लायक, कोई अच्छी-सी लड़की से ब्याह करो। देवकुमार पर गुस्सा करते हुए वे कहते हैं, "देवीना तो किसी की छोड़ी हुई लड़की है, जिसके न बाप का पता, न माँ का।" इस तरह राजकुमार जाँति-पाँति तथा उच्च-नीच का भेदभाव माननेवाला एक खलपात्र है। उसे अपनी पुरखों की

जायदाद का बड़ा गर्व है। अंतीम बार जब देवीना अपने पति देवकुमार से मिलने उसके घर जाती है, तब राजकुमार उसे उससे मिलने नहीं देता और उससे कहता है, "आप है क्या, कौन है, यह मैं नहीं जानता। ना मुझे जानने की कोई जरूरत है।"[29] अतः इस उपन्यास में राजकुमार यह एक परंपरागत मानसिकतावाला खल पात्र है।

राजकुमार परंपरागत मानसिकतावाला एक पुराणमतवादी व्यक्ति है। वह आधुनिक काल में जीते हुए भी पुरानी बातों को मानता है। उसे अपनी पुरखों की जायदाद का बड़ा घमंड है। आगरा में उसकी पुरखों की कोठी है। तथा अपने दादा - परदादाओं ने पीछे छोडी हुई काफी जायदाद है। साथ-साथ बडी मात्रा में जमीन जायदाद तक उसे परंपरासे विरासत में अपने-आप प्राप्त हुई है। अतः कोई भी इन्सान हो उसे अगर मुफ्त में कोई चीज प्राप्त होती है, तब उसे उस चिज का उतना महत्त्व नहीं होता। और इसीलिए वह आदमी उस मुफ्त में मिली चीज का अपने इच्छानुसार इस्तमाल करता है इसमें उसे किसी की तरह के मुनाफा-घाटे की फिक्र नहीं होती है। यही बात इस उपन्यास के प्रस्तुत पात्र राजकुमार के बारे में घटित होती है। वह उस मुफ्त में मिली दौलत के नशे में अंधा हो जाता है। और अपने से छोटे आदमी को हिनता की भावना से देखता है। इतना ही नहीं तो वह अपने छोटे भाई 'देवकुमार' के साथ भी हमेशा सक्ती से पेश आता है, और मौका मिलने पर उसे भली बुरी सुनाता है।

एक खल पात्र जैसा ही उसका आचरण नजर आता है। प्रेम, मुहब्बत से तो उसका कोई वास्ता ही नजर नही आता। उसे तो केवल प्रेम शब्द से ही नफरत है। अपने छोटे भाई देवकुमार तथा उसकी प्रेमिका देवीना के प्रेम संबंध को देखकर उसका खून खौल उठता है। और वह उनके प्रेम का समूल नष्ट करना चाहता है। इसलिए वह देवीना को चुपचाप दस हजार रुपए देकर उसका प्रेम खरीदना चाहता है और देवकुमार को भूलने को कहता है।

3.3.3 रामदीन

रामदीन यह एक बी.ए. तक पढ़ा-लिखा नवयुवक है। वह अपने मामा के यहाँ पढ़ाई कर रहा था। लेकिन उसके पिताजी 'गादूर मिसिर' उसे स्कूल छोड़कर चोरी का काम करने को कहता है। लेकिन वह पिताजी की यह आज्ञा स्वीकार नहीं करता। वह चोरी, लुटारूगिरी का काम करना नहीं चाहता। वह जिस गाँव में रहता है, वह 'लहरतारा' है। गाँव सारी दुनिया में बदनाम गाँव है। उस गाँव में कोई सज्जन नहीं जिता, सब चोरी लुटमार का ही धंदा करते हैं। अतः इन सभी बातों से तंग आकर वह अपना लहरतारा गाँव छोड़कर चला जाना चाहता है। तब देवीना उसका रास्ता रोकती है। तब वह देवीना से कहता है, "नहीं यह गाँव, गाँव नहीं है। यह चोरों का गाँव है।

उठाईगीरों का गाँव है।"[30] और तब से वहीं रामदीन देवीना के साथ रहकर गाँव का विकास करने में लग जाता है।

देवीना के समझाने पर कि यह लहरतारा गाँव तुम्हारा है। इस गाँव का सर्वांगीण विकास करने का काम तुम्हारा है। तुम्हें जो कुछ करके दिखाना है वह तुम्हें इसी गाँव में करके दिखाना है। फिर रामदीन का मत परिवर्तन होता है और वह अपना गाँव छोडकर भाग जाने का विचार त्याग देता है। तथा अपने मन में आए पलायनवादी विचार के लिए देवीना की क्षमा माँगता है। और नम्र भावसे देवीना को अपनी बहन मानता है। तथा उसे कहता है आज से मैं तुम जो कहोगी वही करूँगा क्योंकि मुझे आज तक इतने विश्वास, प्रेम और आदर के साथ मानवता का पाठ पढ़ानेवाला कोई नहीं मिला था। अतः वह कहता है कि मुझे तुम्हारी बातों में सच्चाई नजर आती है। आज से मैं तुम्हारे ही विचारों का अमल करूँगा।

रामदीन के पिताजी एक स्वार्थी, तथा अर्थलोलुप व्यक्तित्व है। उसके पिताजी उसे कहते हैं कि तू अब अपनी पढाई बंद कर। तेरे उम्र के अन्य लडके कितना सारा रुपया कमाते हैं। और तू है कि बुढ़ा होने तक पढ़ाई कर रहा है। वे रामदीन को कहते हैं कि तू चाहे चोरी कर या चाहे गुंडागर्दी कर लेकिन मुझे पैसा चाहिए पैसा। अतः अपने सगे पिताजी गादुर मिसिर के इसी सौतेले व्यवहार के कारण वह हमेशा चिंतित होता है। तथा अपना सबकुछ छोडकर पलायन करना चाहता है। लेकिन जब उसे प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना मिलती है, तब उसके जीवन में परिवर्तन होता है। और वह अपना एक अलग, स्वाभिमान भरा जीवन जीने लगता है।

3.3.4 भंवरा

भंवरा यह एक मस्तमौला नौजवान है। लेकिन वह नियति का मारा है। परिस्थिति ने उसे चोर बनाया है। वह अक्सर अपना गाँव छोड़कर शहरों में ही रहता है। शहरों में रहकर वह चोरी का धंदा करता है। वह बेड़िनों के नाच-गाने का भी शौकीन है। लेकिन जब उसे देवीना के बारे में पता चलता है, वह उसे मिलने के लिए लहरतारा गाँव में आता है। वह आते हीं देवीना के पैर छूता है तथा उसे अपनी बहन मानता है। देवीना के वचन सुनते हीं उसके आचरण में बदलाव आता है और वह कहता है, "चोरी न कोई काम है, ना ई धंदा है। ई तो एक बीमारी है। रोग का फंदा है।"[31] अतः अंत में वह गाँव में स्कूल के लिए साड़े सात हजार रुपए तथा अपनी दो बिघा जमीन देता है।

भंवरा इस उपन्यास का ऐसा पात्र है जो अपने अंदर अनेक अवगुण रखते हुए भी, प्रसंगानुरूप अपने अंदर विद्यमान अच्छे गुणों का दर्शन कराता है। भंवरा की जीवन कहानी काफी करूण है। वह गरीब तेली का लड़का था। कुल सात साल का हुआ

होगा। तब जमींदार साहूजी की कोठी में यह मिठाई चुराते पकड़ा गया। पहले साहुजी के नौकरों ने पीटा। फिर साहुजी ने भंवरा को अपने हाथों बेंत से मारा। तथा इसके पिता दुक्खी तेली को हुकुम दिया जमींदार साहू ने - भंवरा को घर से निकाल दो वरना तुम्हारा कोल्हु बैल छीन लिया जाएगा। अतः भंवरा घर से निकाल दिया गया। वही भंवरा है। अब चार-छः साल बाद कभी-कभार अचानक एक दिन के लिए आता है। एक रात यहाँ बिताकर फिर लापता हो जाता है। पिछली बार जब वह लहरतारा गाँव में आया था तब गाँव की बेड़िन जानहजारा के यहाँ खूब नाच-गाना करवाके रात बिता चुका था। अब वह जब भी कभी अपने गाँव आता तब अपने गाँववाले साथियों को खुश किए बगैर वापस नहीं जाता।

शहरी जिंदगी जिने के कारण भंवरा का रहन-सहन काफी सुधर गया है। उसका पेहराव देखकर कोई भी उसे शहरी बाबू ही मानेगा। उसकी बोलचाल में भी शहरी ढंग है तथा बाते करते वक्त बीच-बीच में अंग्रेजी शब्द आते हैं। अतः जब उसे पता चलता है कि उसके इस लहरतारा गाँव के विकास के लिए कोई देवीना नामक औरत दिन-रात प्रयास कर रही है। तब वह गाँव आकर सीधे देवीना के पैर पकडता है। और अपने लिए क्षमा माँगता है।

3.3.5 गादूर मिसिर

गादूर मिसिर एक मध्यमवर्गीय आदमी है। वह लहरतारा गाँव के ब्राह्मण परिवार में से है। उनका बेटा 'रामदीन' बी.ए. तक पढ़ा है लेकिन अपने बेटे को आगे पढ़ाने की इच्छा गादूर मिसिर की नहीं है बल्कि वे उसे पढ़ाई छोड़ के चोरी, लुटमार करने को कहते हैं। उनके इसी बर्ताव के कारण उनका बेटा घर छोड़कर जाने को तैयार होता है। देवीना जब की लहरतारा गाँव में कुछ नया करने का सोचती है, कुछ सुधार लाना चाहती है, तब-तब गादूर मिसिर उसका विरोध करते हैं। वे देवीना को कहते हैं, "जो तुम इस गाँव में चाहती हो न, वह यहाँ कुछ न होगा।"[32] अतः तुम यह गाँव छोड़कर चली जाओ, वरना इस गाँव के लोग तुम्हें कच्चा खाय जाएँगे।" लेकिन उत्तरोत्तर गादूर मिसिर का व्यक्तित्व विकसित होता गया। अब वे देवीना का साथ देते हैं, तथा गाँव के सुधार में अपना सहयोग जुटाते हैं। जब गाँव की औरतें वैश्या व्यवसाय करने के लिए कलकत्ता शहर जाती हैं। तो उन्हें वापस लाने के लिए वे स्वयं देवीना के साथ जाने को तैयार होते हैं, तथा देवीना से कहते हैं, "बिटिया, मैं साथ चलूँगा तुम्हारे, दिखाऊँगा वे कहाँ पहुँचती हैं।"[33] इस तरह गादूर मिसिर की मानसिकता बदल जाती है और वे भी चोरी, चांडाली छोड़कर अपनी खेती में काम करने लगते हैं।

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

इसतरह इन गौण पात्रों के सिवाय देवीना उपन्यास में अन्य पुरुष गौण पात्रों में चितपावन (राजकुमार का नोकर), राजकुमार के मामा, शाहमुहम्मद, तकी तथा पुनीत और दो भाई-भाई रामधन और श्यामधन आदि पुरुष पात्र भी महत्त्वपूर्ण है। वे पात्र भले ही प्रसंगानुसार उपस्थित होते हैं लेकिन उसी पलभर में भी अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ जाते हैं।

गादूर मिसिर का आरंभिक व्यक्तित्व स्वार्थलोलुप है। वह अपने बी. ए. तक पढ़े पुत्र रामदीन को कहते हैं कि बेटा अब तू इस मुफ्त की पढ़ाई को छोड दे। और जिसतरह गाँव के अन्य लड़के बड़े-बड़े शहरों में जाकर बेईमानी करके वहाँ से बहुत सारा रुपया बटोरकर अपने घर आते हैं। उसीतरह तू भी अपनी पढ़ाई छोड़कर इसी काम में लग जा। लेकिन इस बात को पुत्र द्वारा अस्विकार करते देख वे उसपर गुस्सा होते हैं तथा उसे गालिया देकर घर से बाहर निकालते हैं। इसीतरह उनका आरंभिक व्यक्तित्व स्वार्थलोलुप दिखाई देता है।

जातिवादी परंपरागत मानसिकता का प्रभाव भी गादूर मिसिर के व्यक्तित्व पर दिखाई देता है। जब घर से गाँव से पलायन करनेवाले पुत्र रामदीन को नायिका देवीना वापस पुनः उसे अपने घर में, गाँव में लेकर आती है तब गादूर मिसिर देवीना से झगडा करते हैं, तथा देवीना को उस लेहरतारा गाँव से भगाने की धमकी देते हैं। फिर आगे जब देवीना उनके पुत्र रामदीन को उसकी खेती करवाने तथा हल-बैल जोतने को कहती है तब गादूर मिसिर को भारी गुस्सा आता है और वे देवीना से कहते हैं मेरा पुत्र कोई नीची जाँतवाला नहीं है, वह ब्राहमण का पुत्र है। अतः तुम उसे नीची जात वाले का काम मत लगावो वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। लेकिन उत्तरोत्तर उनका व्यक्तित्व विकसित होता गया है। और एक समय ऐंसा आता है कि लहरतारा गाँव के विकास के लिए वे खुद तैयार होते हैं। तथा देवीना के साथ कंधे को कंधा मिलाकर काम करते हैं।

ब) स्त्री पात्र

3.3.6 बनिया

बनिया इस उपन्यास की नायिका 'देवीना' की माँ है। बनिया एक मातृवत्सल नारी है। जब उसका पति मंगलबाबा रास्ते से एक लावारिस बच्ची को घरपर लेकर आता है। तब वह उनका विरोध नहीं करती बल्कि खुद का एक पुत्र कलुआ होते हुए भी इस लावारिस बच्ची को पालती है। उसका स्वभाव इतना विरला है कि वह अपना एक दूध बचिया के मुँह में तो दूसरा दूध कलुआ के मुँह में देती है और इतनाही नहीं तो उस

बच्ची से खुद की संतान से अधिक प्रेम करती है। बच्ची को लेकर उपजी हर समस्या का वह धैर्य से मुकाबला करती है।

बचिया के जन्म जाति को लेकर जब गाँववालों में खुसर-फूसर होती है तब वह गाँववालों से बड़ी कठोरता से पेश आती है। गाँव के बीचो-बीच खड़ी होकर वह कहती है, "आवै कौन है बड़ा दूध का धूला। सात पुस्त की पोथी उलटकर रख दूँगी हाँ। किसकी हाँड़ी में क्या चावल पका, मुझे सब मालूम है। कोई मेरे मुँह ना लगे, हाँ! नहीं तो देवरी लाँघ दूँगी एक-एक की अंगनइया में, हाँ, मैं कहे देती हूँ।"[34] फिर बनिया को मंगलबाबा किसी तरह समझा बुझाकर शांत करा देते हैं। इसतरह बनिया एक साफ दिल, सत्यवती तथा तेज जबानवाली औरत है। गाँव की भली-भली औरतें ही नहीं तो मर्द भी उससे डरते हैं। वे सब जानते हैं, एक बार अगर उसकी जुबान खुल जाए तो उसे बंद करने की किसकी मजाल है। वह कहती है, "ये मूरख गाँववाले जो कहेंगे, वही हो जाओगे तुम?"[35] बनिया गाँव को श्राप देती है कि गाँव पर हैजा पड़ेगा। अतः गाँव पर हैजा पड़ता है लेकिन उसमें सबसे पहले बनिया ही मरती है।

बनिया का व्यक्तित्व इतना स्पष्टवादीतामय है कि उसके स्पष्टवादी स्वभाव को देखकर उसके आस-पडोस के पुरूष आश्चर्यचकित हो जाते हैं। अपने इसी स्वभाव के कारण उसका पति मंगलबाबा हमेशा उससे सावधानी से काम लेता है। बनिया अपने घर-गृहस्ती में कोई भी निर्णय स्वयं लेती थी मतलब उसी के निर्णय को ही मानकर उसके परिवार के अन्य सदस्य मंगलबाबा कलुआ तथा देवीना चलते थे। जिसतरह बनिया का अपने घर में रौब था उसी प्रकार उसका अपने गाँव में भी रौब था तथा एक अधिकार था। जब बनिया के पति उन्हें बाजार जाते वक्त मिली एक लावारिस बच्ची को अपने साथ लेकर घर आते हैं। तब उन्हें सबसे पहली चिंता अपनी पत्नी की थी की अब वह क्या कहेगी। उसे उसका यह काम पसंद आएगा या नहीं। वे पहले जरा धीरे से दबसे से उसे कहते हैं अरे देख बनिया रास्ते में मुझे इसका प्रसाद मिला क्या हम इस लावारिस बच्ची को पाल सकते हैं क्या? तब बनिया के अंदर से वात्सल्य रस की धारा उमड पडती है। और वह, उसी क्षण इस लावारिस बच्ची को (देवीना) अपने गोद में उठाती है तथा अपने मातृवत्सल्य भाव से उस बच्ची को चूमने लगती है। और उस बच्ची को पालने का निश्चय करती है। वह अपने पति से कहती है अब यह बच्ची हमारे पास रहेगी हम इसे अपना नाम देंगे। तथा उसके लिए समाज की हर मुश्किल का सामना करेंगे। अतः बनिया अपना पुत्र 'कलुआ' होते हुए भी 'देवीना' को खूब लाड प्यार करती है। तथा उसे किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने देती लेकिन दुर्भाग्य से उसकी कम उम्र में ही मौत होती है।

3.3.7 ज्योत्स्नाबाई

ज्योत्स्नाबाई यह एक शोषित नारी है। वह आगरा में कोठी के दिवान 'राजकुमार' की रखेल है। उसे भलीभाँति मालूम है जब तक फूल में रस होता है, भ्रमर उसपर मँडराता है लेकिन जैसे ही वह फूल रसहीन होता है तो उसके तरफ कोई देखता ही नहीं। यही अवस्था अब ज्योत्स्नाबाई की है। क्योंकि रखैल 'रखैल' होती है, उसे बिबी का दर्जा कभी नहीं मिल सकता। अतः वह ऐय्याशी राजकुमार द्वारा शोषित बनी है। लेकिन एक रखेल होते हुए भी ज्योत्स्नाबाई के अंदर एक स्त्री जीवंत है। परिस्थिति ने उसे मजबूर किया है वरना वह एक अच्छी नारी है। एक रात शराब के नशे में जब राजकुमार माधवी दूसरी रखैल पर मनमाना अन्याय अत्याचार करते हैं। पर जब माधवी उसका विरोध करती है तब गुस्से में आकर वह उसे तहखाने में बंदी बनाना चाहते हैं। तब ज्योत्स्नाबाई बड़े धैर्य से आगे आती है और उसका बीच-बचाव करती है।

'देवीना' जब देवकुमार से मिलने उसके घर जाती है तब उसकी सहायता ज्योत्स्नाबाई करती है। और देवीना से कहती है, "मेरा विश्वास है तुम पुरुष जाति की क्रुरता का शिकार नहीं बनोगी।"[36] अतः उसे दूसरों की व्यथा की परवाह है। जब देवीना उसके शोषित जीवन के बारे में पूछती है तब वह उसे कहती है, "जो जीते जी चिता में आ बैठी हो, उसके लिए क्या भागने का कोई मार्ग है।"[37] इस तरह ज्योत्स्नाबाई एक बुद्धिमान नारी है, वह कहती है, जो इन्सान अपने परिवेश से सचेत नहीं है, उसे सूर्य का प्रकाश भी नहीं बचा सकता। अतः ज्योत्स्नाबाई एक अच्छी नारी है लेकिन हालात ने उसे मजबूर किया है।

ज्योत्नाबाई एक परिस्थिति की मारी औरत है। वह इच्छा न होते हुए भी मजबुरी का जीवन जी रही है वह प्रस्तुत उपन्यास के नायक देवकुमार के बड़े भाई राजकुमार की रखैल है। एक रखैल होकर भी उसका सोचना, जानना, और कहना अपने आप यह बतलाता है कि वह एक अलग किस्म की औरत है भले ही आज वह किसी के कोठे पर रखैल हो लेकिन उसका अपना खानदान जरूर एक कुलीन खानदान होगा। आगरे की दिवानजी की कोठी में रहते हुए वह अपने जैसी ही एक परिस्थिति की मारी रखैल 'माधवी' को अपनी बहिन मानती है। तथा अन्य नौकरों चाकरों से बड़ी स्नेह भाव से रहती है। आगरे की उसी कोठी के छोटे मालिक हमारे प्रस्तुत उपन्यास के नायक देवकुमार से वह भाई का रिश्ता जोड़ती है। कुलमिलाकर ज्योत्सनाबाई का व्यक्तित्व मिलनसार व्यक्तित्व था।

ज्योत्स्नाबाई को अपने छोटे मालिक देवकुमार तथा देवीना के प्रेम संबंध बारे में वह भलीभाँति परिचित है। इसिलिए जब देवीना अपने प्रेमी को मिलने उसके घर आगरा

की कोठी में आती है तब वह तुरंत देवीना को पहचानती है। तथा पलभर में ही देवीना की खास सहेली बन जाती हैं। वह देवीना को औरतजात की वास्तविकता को बतलाते हुए कहती है 'देखो यह सूर्य का चित्र हे। एक दिन रात को जब इस चित्र पर बिजली की तेज रोशनी पड़ी। उसपर उड़ती हुई एक तितली आ बैठी। एक छिपकली इसकी ओर बढी। पर छिपकली उसे निगल गई। तब मुझे लगा सूर्य भी तितली को नहीं बचा सका। ऐसा क्यों? अतः ज्योत्स्नाबाई एक उद्यत विचार करनेवाली औरत है लेकिन वह राजकुमार की कामुकता का शिकार बनती है।

3.3.8 भागवंती

भागवंती का सिर्फ नाम ही भागवंती है लेकिन नियति ने उसे अभागा बनाया है। वह एक विधवा धोबीन है। विधवा होने पर भी वह समाज में मानसन्मान के साथ रहती है। वह जवान है, खूबसूरत है मगर किस की मजाल जो उसे वासना की नजर से देखे। सारा गाँव उससे थरथर काँपता है। वह जब काठी चलाती है तब बड़े-बड़े मरदों का कलेजा दहल जाता है। वह एक तंदुरुस्त नारी है। अपने गुजर-बसर के लिए वह लहरतारा गाँव में कपड़ा धोने का काम करती है। तथा उसे खुद की दो बिघा जमीन है उसमें वह खेती करती है। लहरतारा गाँव के लोग आलसी है वे सिर्फ चोरी करना पसंद करते हैं, खेती में काम करना उन्हें पसंद नहीं है। अतः गाँववालों को फटकारती हुई भागवंती कहती है, "अरे सब नमक हराम होई गए गाँववाले। मरद होई गए मेहरा औ, जनानी होई गई छिनार। इन्हें तो मारि-मारि कै भुरता बनाय दैय, बस, सब रास्ते पर आय जाए।"[38]

भागवंती एक परिवर्तनकारी नारी है। वह हमेशा देवीना के साथ रहती है तथा हर मुश्किल में देवीना की मदद भी करती है। जब देवीना एक दिन रामदीन के साथ खेती में काम करने जाती है, तब उसका विरोध करने के लिए गादूर मिसिर चार आदमियों को लेकर आता है। तब भागवंती उस पर बरस पड़ती है, "बोल, लाठी से मारने आया है। बड़ा बामन बनता है। जब गाँव से चोरों का झुंड़ जाता है, शहर में चोरी करने, साधु का भेस बनाकर क्यो तु नहीं जाता उनके साथ? कहाँ का बड़का ब्राह्मण है तू?"[39] तथा वह चिढ़कर कहती है, "ऊपर से राम-राम, भीतर से कसाई का काम।" इस तरह भागवंती एक निड़र नारी है वह सत्य की लड़ाई में हमेशा देवीना के साथ रही है।

भागवंती एक शादी-शुदा युवती थी, लेकिन तकदीर उसका साथ नहीं देता। विवाहोपरांत कुछ ही दिनों में उसका पति मर जाता है। और उसे पतिव्रता के जगह एक विधवा का जीवन जीना नसीब होता है। फिर भी भागवंती हिम्मत नहीं हारती

और अपनी कमर कसके तथा पति विरह में खून के आँसू पीकर भी नए तरीके से अपनी जीवन आरंभ करती है। उसके पास अपने पति के हाथो कमाई जमीन है, लेकिन वह अपनी खेती में कोई फसल नहीं उगा पाती। क्योंकि वह जिस 'लहरतारा' नामक गाँव में रहती है वह गाँव काफी बदनाम है। मानो वह गाँव सिर्फ चोरों का उठाईगिरों का गाँव हो। इसीलिए उस गाँव में कोई कुछ भी काम नहीं करता। सारा गाँव बड़े-बड़े शहरों में तथा आस-पडोस के गाँवों में चोर चोरी करता और अपना गुजर बसर करता था। अतः ऐसे गाँव में अगर कोई खेतीबारी भी करता तो उसका सारा अनाज चोरी हो जाता। इसिलिए भागवंती अपनी खुदी की खेती हुए भी उसमें कोई अनाज नहीं पैदा कर पा रही थी। और अपने गुजर बसर के लिए गाँव में किसीके घर में कपडा धोके तो किसी के घर में बर्तन मांजके अपना गुजर बसर करना पड़ता था।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका 'देवीना' जब उसके संपर्क में आती है तब देवीना और भागवंती गहरी सहेलिया बन जाती है। और तब से भागवंती की हिम्मत दूगनी बढ़ जाती है। तथा उसे अपना खोया हुआ स्वाभिमान, पुनः प्राप्त होता है। अब वह खुद की खेती में स्वाभिमान के साथ काम करती है तथा बाकी गाँववालों को खेती करने की सलाह देती है। वह हर काम में देवीना का साथ देती है।

3.3.9 काली

काली यह एक शोषित नारी है। वह लहरतारा गाँव में अपने दो छोटे भाई तथा विधवा माँ के साथ एक टूटे-फूटे मकान में रहती है। जब उसके पिताजी बिमार थे तब उसकी माँ ने एक आदमी से दवाइयों के लिए उधार पैसे लिए थे लेकिन काली के पिताजी उस बिमारी में ही मरते हैं। अतः उस पैसों के लिए वह आदमी जवान काली को खरीदकर अपने घर में रखैल के रूप में रखना चाहता है। और जब काली इस बात से सहमत नहीं है, इसलिए वह आदमी काली को खुलेआम, दिनदहाड़े मार-पीट रहा है। गाँव के तमाम औरतों और मर्दों में से कोई भी आगे जाकर उस अत्याचार से काली को मुक्त नहीं करता। वह जमीन पर पड़ी रो रही है, तथा उसके माथे से खून निकल रहा है। फिर भी उसे कोई बचाता नहीं है। उसी वक्त वहाँ देवीना आती है और काली की रक्षा करती है। वह चिल्लाती है, "खबरदार किसीने हाथ उठाया तो।"[40] अतः भीड़ का शोरशराबा अचानक थम जाता है। भीड़ में से एक आदमी हाथ में लाठी लेकर देवीना के सामने आता है और कहता है, "यह मेरी औरत है। इसे मैंने आठ सो रूपए में खरीदा था।"[41] तब काली की माँ गुस्से में आकर उस आदमी से कहती है, "कब हुई शादी? किससे

की? चलो भगवान के मंदिर में गंगाजल लेकर कहो।"[42] इस तरह काली एक शोषित, पीड़ित नारी है।

इस तरह गौण पात्रों के सिवाय देवीना उपन्यास के अन्य स्त्री गौण पात्रों में माधवी (राजकुमार की रखैल), बादररेखवा, गुलमेहंदी, जानहजारा (वैश्या व्यवसाय करनेवाली) तथा फुलगेंदा (नौकरानी) आदि नारी पात्र भी महत्त्वपूर्ण है। यह पात्र अल्प समय में भी अपनी एक अमीठ छाप छोड़ जाते हैं।

काली यह परंपरागत पुरुषी अन्याय अत्याचार का शिकार हुई युवती है। उसकी शादी तो सिर्फ नाम के लिए हो जाती है। उसका पति उसकी गरिबी देखकर उसे छोड देता है। उसका पति उससे धन संपत्ती चाहता था लेकिन काली के परिवार की हालत बिल्कुल खराब थी। अतः अपनी पत्नी की खस्ता हालत देखकर वह उसे छोड देता है। तब काली पर मुसिबतों का मानो पहाड टूटता है। इसी परिस्थिति में काली के परिवार की हालत काफी हिन-दीन थी। उसके पिताजी असाध्य बिमारी से पिड़ित थे। माँ भी अक्सर बिमार रहा करती थी और काली के दो छोटे भाई थे इस परिस्थिति में काली की माँ गाँव के सावकार से आठ सौ रुपये उधार लेती है। वे सारे पैसे बिमारी में खर्च होते हैं। अतः इतना करने पर भी काली के पिताजी उस बिमारी से बच नहीं पाते। उसी बीमारी में उनकी मौत हो जाती हैं।

पिताजी के बीमारी में लिए उन आठसौ रुपयों के लिए उस गाँव के नौजवान उसके साथ जोरजबरदस्ती करना चाहते हैं। लेकिन उसके उस अन्याय अत्याचार से प्रस्तुत उपन्यास की नायिका उसे मुक्त करती है। इस मेहरबानी के लिए काली हमेशा देवीना के प्रति श्रद्धा भाव रखती है। अंत में जब काली का पति उसे लेने के लिए आता है तब वह पहले देवीना से पूछती है कि "मैं मेरे पति के साथ जाऊँ? तब देवीना मजाक में कहती है फिर तुम्हारा पति तुम्हें मारेगा तो? तब काली कहती है, "वह अब हाथ उठाएगा तो में अन्न-जल छोड दूँगी। फिर वह मेरे कदमों पर गिरेगा।" अतः काली एक आत्मविश्वासु युवती है।

निष्कर्ष

देवीना उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण सफलता के साथ हुआ है। चरित्र-चित्रण उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उपन्यास का मूलाधार मानव तथा उसका चरित्र है। इसलिए चरित्र-चित्रण के बिना उपन्यास 'उपन्यास' नहीं कहला जा सकता। देवीना उपन्यास की नायिका 'देवीना' है। वह एक स्वाभिमानी युवती है। उपन्यास का नायक 'देवकुमार' है जो सुखी संपन्न परिवार का सदस्य है तथा

देवीना का प्रेमी तथा पति है। लेकिन उसे अंत में देवीना के नारी स्वाभिमान के सामने झुकना पड़ता है। राजकुमार, मंगलबाबा, रामदीन, भंवरा आदि प्रमुख पुरुष गौण पात्र है। तथा बनिया, जोत्स्नाबाई, काली, भागवंती आदि प्रमुख स्त्री गौण पात्र है। अतः यह गौण पात्र होते हुए भी अपनी व्यक्तित्व की अमीठ छाप पीछे छोड़ जाते हैं। कुल मिलाकर देवीना उपन्यास का चरित्र-चित्रण सफलता के साथ चित्रित हुआ है।

* * *

संदर्भ सूची

अ. क्र		पृ.
1.	डॉ. लक्ष्मीराय - आधुनिक हिंदी नाटक, चरित्र सृष्टि के आयाम	394
2.	डॉ. ऋता बाबा - उपन्यास के सिद्धांतों का विकास और विवेचन	79
3.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	31
4.	वही	26
5.	वही	34
6.	वही	46
7.	वही	57
8.	वही	60
9.	वही	63
10.	वही	108
11.	वही	69
12.	वही	78
13.	वही	105
14.	वही	106
15.	वही	20
16.	वही	26
17.	वही	42
18.	वही	44
19.	वही	47
20.	वही	49
21.	वही	50
22.	वही	50
23.	वही	55
24.	वही	84
25.	वही	104
26.	वही	47
27.	वही	35
28.	वही	49
29.	वही	81
30.	वही	59
31.	वही	94
32.	वही	62

33.	वही	69
34.	वही	31
35.	वही	33
36.	वही	82
37.	वही	83
38.	वही	63
39.	वही	64
40.	वही	56
41.	वही	56
42.	वही	57

* * *